भूमिका



यह बात सर्व साधारण कहसक्ते हैं आर [redacted] का भी कहना है कि इस समयमें भूमिकी उर्वराशक्ति जाती रहीहै यह इनका कहना यथार्थही है क्योंकि जो पदार्थ भूमिमें फसलोंके उत्पन्न करनेके उपयोगमें आते हैं वे पुनः भूमिमें पहुँचते नहीं और न यहांके किशान लोग इतना परिश्रम करतेहैं कि भूमिको कुछ विशेष गहरी हलसे खोदकर नीचेकी उर्वरा मिट्टीको ऊपर निकाल सकें क्योंकि उनके बैल इतने बलवाले नहीं होते जो एक फुट वा उससे अधिक गहराईकी मिट्टीको हलकी नोकसे उखाड़कर ऊपर लेआवें. इसके सिवाय किशान लोग अपने पोहोंको किस रीतिसे पालना चाहिये और रोग फैल-नेके समय किस रीतिसे पशुओंको रखना चाहिये बिल्कुल नहीं जानते और इनही लोगोंको क्या बरन् बडे २ जमींदारभी यह नहीं जानते कि जो पशु खेतीके लिये किशानोंके हाथ पैरहैं उनकी स्थितिमें सुधार किस प्रकार होसकताहै. इन सब बातोंको ध्यानमें रखकर खेतीके अति उपयोगी पोहोंकी उन्नतिके उपाय सूचक यह पुस्तक बनानेमें आयाहै.

इस पुस्तकके बनानेमें कुछ तो अपना अनुभव तथा मित्र

भूमिका।

जमींदारों और किशानोंसे प्राप्त ज्ञानका समावेश किया गयाहै और फिर पशु रोग चिकित्सा तथा चारेके खास बनाना आदि उपयोगी विषयोंमें गुजराती भाषाके खेडुत तथा महाराष्ट्रीके शेतकरी मासिक पत्रों तथा उर्दूकी पुस्तक इलाजुलमवाशीसे बहुत सहायता मिलीहै. जिन २ महाशयों से सहायता किसी प्रकार भी प्राप्त हुई है उनका उपकार माननेमें चित्त कुछ कम उत्साहित नहीं होता.

ग्रंथकर्ताको पूरी २ आशाहै कि इस पुस्तकसे केवल् किशान जमींदारों हीको नहीं वरन् सर्व साधारण को भी लाभ होगा और पाठकगण इस पुस्तकमें जो कोई अशुद्धियांहों उनको सुधार कर क्षमा करेंगे.

पचौली गंगा शंकर नागर.



कृषिविद्या.

भाग ३.

(पशुपालन.)

अध्याय १.

खेतीके लिये जितना हल चलाना, हैंगा फेरना, नराना, बोना, जल सिंचन करना, खात देना नाजका खलियानमें पटकना, रूंदना आदि उपयोगी और सुधारके लायक काम है उतना और उससे अधिक बढ़कर खेतीके उपयोगी पोहों का सुधारना है जो पोहे सुधरी हुई अवस्थामें होंगे तो किसानको हल चलानेमें सुगमता होगी जो वह १० बीघे जोतता होगा तो बैलों के वलिष्ठ और पुष्ट होने पर १५ बीघे उतने परिश्रमसे भूमि जोतसकेगा भूमिमें गहरा हल चलाने

लायक होगा जिससे भूमिकी उपज बढ़जायगी इत्यादि भूमिके जोतनेके सम्बन्धी कामों को सुगमतासे कर सकेगा पशुओंके अच्छी अवस्था में होनेसे किसान एक जोड़ बैलसे उतना खेतको सींच सकेगा जितना दुबले बलहीन दो जोड़से सींचसकता है और इस सबब अनावृष्टिके समयमें अपने खेतमें जल सिंचन कर फसल उ[illegible] करसक्ता है और अकालके भयसे बचसक्ता है पशुओंको बलिष्ठ चारा आदि देनेसे बलवान् करसक्ता है और फिर उनके गोबरसे खात अच्छा भूमिमें देनेके लिये मिलसक्ताहै जब नाज कट कटाकर खलियानमें दांय चलाने को पटका जाता है तो बलवान् पशुके पैरोंके नीचे दबकर नाजके दाने शीघ्र जुदे होजाते हैं और भूसाभी महीन होजाता है और यह काम एक महीनेकी जगह२० दिनमें खतम होसक्ता है इससे किसानको समय

और परिश्रम कम लगता है और फिर शीघ्र ही दूसरी फसल करनेको तय्यार होजाता है जो पोहे बलिष्ट हों और २ खेतीके उपयोगी वस्तु सुधरी हुई अवस्थामें हो तो एक वर्षमें तीन फसल तक किसान कर सक्ता है.

जो पोहे ही सुधरी हुई अवस्थामें न होंगे तो यह ऊपर सूचित किये हुए फायदे प्राप्त होने कठिन होजायँगे इसलिये किसानों जमीदारों तअल्लुकेदारों राजों महाराजों तथा सरकार को उचितहै कि, खेतीके उपयोगी पोहोंके सुधारके लिये यत्न करें जिससे पशुओं तथा गौओंकी रक्षा हो और अन्न अधिक उत्पन्न होकर कोषकी आय बढ़े और दूध, घी, खात आदि वस्तु सस्ती और उत्तम प्राप्त होती रहैं.

खेतीके कामके पोहोंको [illegible] तो गाय,बैल,भैंस,भैंसे,घोड़ा, भेड़ी,बकरी,आदि हैं

जिनमेंसे घोड़े तो इंगलेंडमें हल चलानेके काम आते हैं परन्तु इस देशमें तो इनकी लीदके सिवाय जो खातमें दीजाती है और कोई काम खेती सम्बन्धी नहीं लिया जाता इस पवित्र देश भारत वर्षमें तो विशेष कर बैल और भैंसे हल चलाने आदिमें काम लाये जाते हैं इनमें भी भैंसे विशेष कर खातकेही उपयोगी होतेहैं क्योंकि ये मिहन-तके-काममें उतने स्थाई नहीं होते जितने बैल होते हैं गर्मीके दिनोंमें तो ये थककर हांपने लग-जाते हैं और चौमासेमें गर्मीके मारे होनेसे पानीमें पड़ा रहना इनको रुचता है और जो काममें लियाभी जाय जैसा कि, कोई कर बैठते हैं तो बैलोंकी बराबर उनसे काम नहीं होता.

गाय और भैंस दोनों दूध,दही, घी और गोबर के काम की हैं इनसे जो दूध उत्पन्न होता है उस को पीनेसे शरीरको बल मिलता है यह सब जानते

ही हैं और गायका दूध तो हलका होनेसे रोगिओंको भी ओषधि में दिया जासक्ता है इन का दूध जमाकर दही और फिर दही को चला अर्थात् बिलोकर घी और मट्ठा पैदा किया जाता है घी जितने काम की वस्तु है उसकी बाबत लिखना वृथा ही पत्र रँगना है क्योंकि इस बिना कोई पदार्थ मनुष्य के खाने का नहीं बन सक्ता और न स्वादिष्ट हो सक्ता है इस के सिवाय गौका घृत तो ओषधि है मट्ठे को किसान लोग बहुतायतसे रोटीके साथ खाते हैं और उनके गोबर से ईंधन का काम लेते हैं तथा अत्युत्तम नाईट्रोजिन वाला खात बनाते हैं.

भेड़, बकरी की मेंगनियां तो खातके उपयोगी होती हैं और दूधको मनुष्योंके पीनेमें गाय, भैंस के दूधकी तरह आता है बकरीका दूध तो वैद्यकमें हलका और पाचक लिखा है इससे औषधवत् है.

इस ऊपर के लेखसे सबको विदित होगा कि, घोड़ा और भैंसे तो केवल खात ही खेतोंको देसक्ते हैं पर गाय,भैंस,बकरी, भेड़ी खातके सिवाय दूध घी, मट्ठा आदि मनुष्योंके खाने और उनको बल उत्पादक वस्तु भी दूध, घी के आकार में प्रदान करते रहते हैं और भेड़ी अपनी ऊनको वस्त्र आदिके लिये देती हैं.

दूध, घी, मट्ठा और खात देने के सिवाय गाय तो किसानों को बहुमूल्य रत्न देती हैं कि जिसके न होने से ऐसा कहा जा सक्ताहै कि सारा भारतवर्ष बिना अन्न के रह जाय अर्थात् जिस के बिना खेतों से फसल कर लेना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव ही हो सक्ता है जैसा ऊपर वर्णन हुआ है जो बैल न हों तो कृषक बिना हाथ पाँवके समझे जाँय और उनके खेती के सब काम बन्द होजाँय वास्तव में पूछिये तो बैलोंके न होनेसे वा

दुर्बल होने से किसान अपने कुटुम्बका भी पोषण मुश्किल से करसक्ता है जब वह अपने ही कुटु-म्ब के पोषण के लायक नहीं उत्पन्न कर सक्ता तो फिर हम लोगोंके खाने को कहां से प्राप्त होगा इतना ही नहीं है भारतवर्ष अपने सिवाय और २ देशों को भी अपनी उपज से पोषण करता है तो फिर यह कष्ट हर एक देशों में भी फैल सक्ता है इसलिये सबतरह यही मन्तव्य ठहरता है कि जहां तक बन सके इस खेती के काम के पोहों को सुधारा जाय और इन को बलिष्ठ हृष्ट पुष्ट करना चाहिये.

ईश्वर ने अपनी सृष्टि भरके जीवों में मनुष्य को ही बुद्धि दी है कि जिससे वह कर्तव्याकर्तव्य भला बुरा पहँचान सक्ता है और दुष्ट से दुष्ट और बलिष्ट से बलिष्ट प्राणीको वश कर अपना कार्य करता रहता है पर इतनी बुद्धि और चातुर्य

ता पर भी यह अपने जीवन का आधार दूध, घी गोबर पर रखता है जो पशुओं से उत्पन्न होते हैं और विशेष कर तो गौ पर तो इस देश बासियों का लोक परलोक दोनों निर्भर है.

इस लोक में तो गाय से वे पदार्थ प्राप्त होते हैं कि जिनके बिना धनाढ्य से लगा गरीब तक अपने जीवन का एक, आधार मानते हैं और इन्ही गायके बच्चोंसे किसान लोग अपने खेतों को जोत बोकर मनुष्य मात्रके प्राण की रक्षा के लिये अन्न उत्पन्न कर पाते हैं अन्न से प्राण स्थिति रहता है यह सर्वमान्य सिद्धि है यह अन्न बैलों के होनेसे किसानो द्वारा प्राप्त होता है इसलिये पूंछा जाय तो बैल अर्थात् गौही हमारी अन्नदाता वा पोषक है.

दूसरे गौओं की जो प्रशंसा शास्त्रमें वर्णित है उससे भारतवर्ष का कोई अंजान नहीं है जो

शास्त्र और पुराणों को देखा जाय तो दान करनेमें गौदान की बराबरी का कोई दान नहीं रक्खा सेवा करने के लिये गौकी सेवा इतनी बड़ी लिखी है कि माता पिता और गुरुसेवा की बराबर क्या उससे भी बढ़कर है गृहस्थ लोगों में अब भी ऐसा प्रचार है कि रसोई तय्यार होचुकने पर गोग्रास का भाग अलग रख देते हैं स्त्रियां अपने सौभाग्य के लिये गौ का व्रत रखती हैं और इनका पूजन करती हैं ऋषि मुनियों ने इनकी रक्षा वा सेवा अपने यज्ञों की सिद्धी के लिये की है ऐसा पुराण इतिहासों से जाना जासक्ता है देखो दिलीप महाराज ने वशिष्ठजी की नन्दनी गौ की कितनी सेवा अपने प्राणतक जोखों सहकर की थी श्रीकृष्ण भगवान् ने भी गौकी जितनी सेवा वा रक्षा की है वह सबही लोगों को विदित ही है इनकी महिमा कहां तक

कहैं स्वामी दयानन्द आदि नूतन आचार्योंने भी इनकी रक्षाके लिये जैसा उद्योग किया है वह भी सब को विदित ही है चाहे जिस तरह उन्होंने माना हो पर गौका पालन पोषण करना तो उन्होंने स्वीकार किया है.

अन्न उत्पादन करने और धर्मसे सद्गति प्राप्ति करनेके सिवाय गौके दूध, घी आदिके सेवनसे मनुष्य आयुष्यमान बलवान् बुद्धिमान तेजवान धैर्यवान आदि गुणोंको ग्रहण करताहै जितना दूध, घी स्वच्छ बलयुक्त होगा उतनाही ऊपरके गुणोंको उत्पन्न करेगा और जितना बलहीन होगा उतनाही यह सब गुण लोपसे दिखाई देंगे गौ बलवान और पुष्ट होगी तो उसकी सन्तान बलयुक्त और पुष्ट होगी दूध घी आदिभी पौष्टिक होंगे और उनके गोबरमें वे पदार्थ विशेष होंगे जो खातको विशेष गुणवाला करेंगे इसलिये यही

मुख्य उपाय है कि शारीरिक तथा खेतीके लाभ के लिये गाय आदि पोहोंको बलवान और पुष्ट किया जाय क्योंकि जो गाय वा पोहेही बलहीन होंगे तो फिर कोई प्रकारका खेतीका सुधार काम न कर सकेगा.

पशुओंके सुधार और उनको बलवान करनेके लिये जो उपाय लेने चाहिये उनमेंसे मुख्य२ यह हैं कि जिनको करनेसे आशा होसक्ती है कि पशुओंकी सन्तान अच्छी होजायगी और फिर खेती आदिके लिये अच्छे २ बैल आदि प्राप्त हो जायँगे.

१ पशुओंकी मावजत.
२ पशुओंका चारा और दाना.
३ रोगोंका निदान और चिकित्सा
४ पशुओंकी श्रेष्ठ नसलोंका पैदा करना.



अध्याय २.

मावजत.

गाय आदि पशुओंके हृष्ट पुष्ट करनेके लिये यह एक आवश्यक बात है कि वे प्रसन्न रहें कोई प्रकार का दुःख उनको न पहुँचे क्योंकि जो मानसिक दुःख रहता है तो सब प्राणीमात्रके रुधिरके संचार में अवरोध होजाता है और फिर शरीर दुबला होकर बलहीन होजाता है यही दशा पशुओंकी भी समझना चाहिये पशु गूंगे होते हैं और अपना दुःख कह देनेकी शक्ति उनमें नहीं है इस हेतु जहां तक बन सके उनको बाह्य पदार्थोंसे संतुष्ट और हर्षित रखना चाहिये जोवे हर्ष युक्त रहेंगे तो अपने चारे को भले प्रकार पचा सकेंगे और पुष्ट होजायँगे.

चित्तके हर्षित रखनेमें बाह्य पदार्थोंकी सफाई एक मुख्य कारण है इसलिये पशुओंके रहने के स्थानमें तथा उनके खानेके चारे की उत्तमता

पर ध्यान देना चाहिये जितनी गौशाला साफ और स्वच्छ रहेगी उतने ही पशु भी देखनेमें स्वच्छ और मनोहर लगेंगे और जब गौशाला वा अस्तबल साफ रहेगा तो उस स्थानमें की वायु भी न बिगड़ेगी बरन् अच्छी रहेगी और फिर कोई बीमारी पशुओंको न होगी.

पशुओं की मावजत के लिये प्रथम बात उन के रहने के लिये शाला बनाना है शाला बनाना धन का कार्यहै और वह सब लोगों से नहीं हो सक्ता धनिक लोग तो अपनी २ गौशाला तथा अस्तबल बना सक्ते हैं पर गरीब लोग जो गौको पालते हैं उनको अधिक कठिनता पड़ेगी जो उन पर भी शाला बनाने का बोझ पटका जाय क्योंकि वे इतना धन नहीं रखते इन सब कारणों को ध्यान में लाकर कुछ उपाय पशुओं के रखने के यहां पर लिखते हैं जिसमें गरीब और धनिक सबोंको सुगमता पड़ सकेगी.

ग्रामोंमें तो सरकार ऐसा बन्दोबस्त करदे कि गांवके बाहर चारों दिशाओंमें वा ग्राम छोटा हो तो एक तरफ गोशाला जमीदारों तथा किसानो से कह कर बनवादे कि जिस में सब ग्राम भर के पशु बँधा करें ये गौशाला वा तबेले ऐसे प्रकार से बनवाये जायँ कि जिसमें हवा बे रोक टोक आती जाती रहे भूमि जहां गोशाला बनवाई जाय ऊंची होनी चाहिये और वहां हवा भी अच्छी तरह आती हो इस जगह पर एक बाडा पक्का तैयार किया जाय और फिर उस में ग्रामकी ओर की दीवाल में फाटक लगाया जाय इस शाला में चारोंओर छप्पर वा खपरेल ऐसी डालनी चाहिये कि जिस में होकर मेहका पानी न टपक सके और न सूर्य की किरणें भीतर घुस सकें छप्पर और खपरेलके ठहरने के लिये पक्के खम्भे खड़े किये जायँ तो बहुत श्रेष्ठ होगा

और जो इतनी समाई नहो तो मोटे २ लकड़ी के और जहां पत्थर सस्ताहो वहां पत्थर के खम्भे खड़े किये जानाभी अच्छाहोगा इन छप्पर तथा खपरेल के नीचे की भूमिमें रेता बिछाना श्रेष्ठ होगा और जो होसके तो खरंजा बांधा जाय रेत से यह फायदा होगा कि जो मूत्र इन पशुओं का होगा वह रेत में रह जायगा और फिर उस रेत भींगे हुए को इकट्ठा करने से खात में काम आसकेगा खरंजा बांधा जाय तो फिर शाला में ऐसी नालियां बनानी चाहिये कि जिनमें होकर वह मूत्र एक कुंडमें जो बाड़े के बाहर बनाया जाय इकट्ठा होता रहे इस मूत्र को भी खात के काम में लासक्ते हैं जो खरंजाबने तो उस को गाय भैंस आदि के नरहाई को जाने के बाद धो डालना अच्छा होगा ऐसा करने से मूत्र की दुर्गंधि जाती रहेगी और फिर वहां की वायु न बिगड़ेगी और वह धोवनका पानी जिस

में गोबर और मूत्र के अंश होंगे उस हौज में भरता रहेगा और फिर खात के काम में आवेगा.

इस शाला की दीवालों में बाहर की तर्फ इतनी बड़ी खिड़की रहें कि जिन में होकर सूर्य का प्रकाश भीतर आजाय और पवन पोहों के अंग को लगता रहै और पोहे उन खिड़कियों में से खेतों की हरयाली को बराबर देख सकें इन खिड़कियों में किवाँड़ भी लगने चाहिये कि शीतकाल की रात्रिमें ठंढी हवा और गरमी की दुपहरी में लू पोहों को न सतासके भीतर की तरफ के दरवाजों में सिरकी वा कड़व की टट्टी वा पड़दे बांधदेने चाहिये.

उस शालाके बीचके चौक को खरंजे का बनाना अच्छा होगा जो खरंजा न बांधा जायगा तो फिर चौमासे में कीचड़ होकर सब स्थान गंदा होजाने का सम्भव है जहां मूत्रके एकत्र होनेका कुण्ड

बने उसके समीप ही एक खड्डा छप्पर से ढका हुआ गोबर तथा मूत्रसे मिली मिट्टी और खानेसे बचा हुआ चारा घास और कूड़ा करकट राख आदि भरनेके लिये बनाना चाहिये.

इस खड्डेमें एकत्रित गोबर आदिसे उस प्रकार का खात बनसक्ता है जैसा कि खातके वर्णन करने में लिख चुकेहैं यह खड्डा एकही नहीं होना चाहिये वरन् तीन बनाये जायँ तो अधिक उत्तम और एक २ ऐसा बड़ा बनाना कि जिसमें चार मास का गोबर चारा आदि खात के लिये भरा जासक्ता हो इससे प्रयोजन यह है कि जब एक भर चुके दूसरे को भरना आरम्भ करे जब तीनों भर चुकेंगे तो फिर पहले दूसरे का खात तैयार होजानेसे खेत में देने लायक होजायगा और फिर वे दोनों खाली होजायँगे तो फिर उनको भरना शुरू होजायगा इस प्रकार क्रम बँधा रहेगा.

शाला में पशुओंके बँधनेके अलग २ भाग रहें कि जिनमें पशु आरामसे उठ बैठ सकें तथा चारों तरफ को घूम सकें ऐसे विभाग करने में इस वात का ध्यान भी रक्खाजावे कि गाय भैंस के बच्चे भी उनमें बँध सकें और गाय भैंस से इतने दूर रक्खे जायँ कि बछड़े दूध न चोख जासकें.

भेडी, बकरियोंके लिये इसबाड़े में एक स्थान होजावे जहां वे झुंड के झुंड आरामसे छाया में खड़े रह सकें.

ग्रामीण लोगोंके लिये कुछ लिखकर अब उन लोगोंकी सेवामें कुछ सूचना देना विषय विपरीति नहीं होगा कि वो लोग गौ, भैंस आदि पालते हैं पर न तो धनी हैं और न ग्राम निवासी हैं कि जिनके लिये ऊपर लिख चुके और नगरमें रहते हैं ये लोग अपनी गौ, भैंसको अपने रहनेके मकान-

रही बांधते हैं और जब गरमी होती है तो उसे आँगनमें बांधते हैं जिनके गौशाला हैं उनके तो सब सुभीता हो सक्ता है और जिनके दरवाजे पर चबूतरा होताहै उनको भी कुछ आराम गरमीम पशु बांधनेका मिलता है पर जिनके इन दोनोमेंसे कोई और स्थान नहीं है उनके घर गंदे होनेमें क्या संशय है.

उन लोगोंको जहां तक होसके सफाई रखनी चाहिये क्योंकि जो सफाई न हुई तो घरबुरा मालूम होगा मच्छर डांस अधिक होंगे और बीमारी फैलने का भी डर रहता है जिस स्थानमें गौ आदि बँधें चाहे वो पौलहो कोठाहो उसमें वायुके आनेके लिये खिड़की जरूर होनी चाहिये जिससे पशुको ताजी हवा मिलती रहै.

इन घरमें गौ आदि रखने वालोंको गोबर और मूत्रका संचय करना अत्यावश्यक है पर

ऐसा देखनेमें आता है कि वे संचय करनेके बदले गोबरको तो लीपने तथा इंधनके काममें लाते हैं और फिर जो उसकी राख बचती है वह प्रायः बासन मांजनेसेही खर्च होजातीहै इस हिसाबसे देखा जाय तो हजारों मन गोबर और राख का खात व्यर्थ जाता है जो यही उपयोगमें लाया जाय तो सैकड़ों बीघा भूमिमें अच्छी फसल पैदा करसके गो आदिका मूत्र तो इतने काम नहीं आता और वृथा पड़ा रहकर सूख जाता है इस तरह खातके वृथा खच जानेको रोकनेके लिये यही अच्छा उपाय हो सक्ता है कि सब गाय, भैंस पालने वाले अपने २ गोबर को बेचदें और सरकार तथा म्युनिसीपेलिटियोंको चाहिये कि इस खातके एकत्र करनेके लियेभी कायदे बनादे जिससे दोनों ओर लाभ हो.

एक बातका प्रश्न इस जगह उठ सक्ता है कि

जो ऐसा कायदा बनजायगा तो सैकड़ों हज़ारों गरीब लोगोंकी रोटी मारी जायँगी जो गोबरके कंड़े थापकर तथा बेंचकर लाभ उठाते हैं इस हानिके दूर करनेके लिये मेरी समझमें यह उपाय श्रेष्ठ होगा कि नगर तथा ग्रामके इंधनके खर्चके लिये सरकार नगरके चारों तरफ और ग्रामकी सीमामें उसकी भूमिके $\frac{1}{10}$ में भागमें ईंधनकी लकड़ियां लगाये जानेका बन्दोबस्त करदे कि जिससे नगर वा ग्रामका ईंधनका खर्च चलाजाय और गोबरके छिन जाने वा बेच दिये जानेसे लोगोंको हानि न मालूम हो.

बहुतसे विद्वानों का मत है कि जंगलों के कटजाने से मेह कम वर्षता है इससे हिन्द में अकाल बहुत पड़ते हैं वृक्षोंके पत्ते कारबन को वायु में स खींचते रहते हैं और इस रसायनिक बदलावके लिये सूर्य की गर्मी का खर्च बहुत

होता है इससे जंगलों में तथा आस पासकी हवा-ठंढी होजाती है और फिर हवा में के जल कणको जमकर मेघरूप में होजाने में अधिक मदद मिलती है पानी जो बरसताहै वह वृक्षोंकी जड़ों द्वारा भूमि के नीचे की तह में चला जा"ा है इसी कारण नदियां शीघ्र नहीं सूखतीं तथा भूमि में तरी रहती है जब कभी अनावृष्टि होतो यह तरी बहुत काम दे जातीहै इसलिये जंग-लोंका बनाना भी आवश्यक है.

लकडियोंके एवज तथा मोल लेकर जो गोबर नगरों में इकट्ठा किया जाय उस को किसानों को सस्ते मोल बेंच देने से लाभ ही होगा किसानों को भी जरूरत पर खाद मिल जायगा

गांवों में जो शालाओं का गोबर एकत्रितहो वह उन लोगों में पोहों के हिसाबसे पशुओं के मालिकों में बांट दिया जाय और उन सबसे

खात बनाने खर्च पड़े उसका बन्दोबस्त जमीं-दार करदे और उस खर्च को उन मालिकान पोहोंसे मानिन्द बीजके दामों के वसूल करे.

जैसा गोबरके एकत्र करनेके कुछ उपाय ऊपर सूचित किये वैसे पशु मूत्रके इकट्ठे करनेके नहीं होसक्ते क्योंकि यह इकट्ठा करनाही दुःसाध्यहै पर जहां तक होसके इस विषयमें भी ध्यान देकर सुगमतासे काम करना अच्छा होगा.

असल विषय पशुओंकी मावजतके अन्तर्गत जंगल खातका भी कुछ लिखना पड़ा पर अब इसको यहाँ ही छोड़ पूर्व विषय कोही पुनः ग्रहण कर लिखा जाता है.

जो लोग धनाढ्य हैं और उनके यहां गोशाला वा अस्तबल हैं उनके लिये तो इतनाहीं कहना बस होगा कि वे ऊपर लिखी सूचनाओंको ध्यानमें रख पशुआदिकोंका पालन करते रहें.

यह सब प्राणीमात्रके शरीरका धर्म है कि जब उष्णता विशेष होती है तो स्वेद (पसीना) वहुत आता है इसके निकलनेसे शरीर हलका और मन वहाल रहताहै जो कहीं ये छोटे२शरीरके छिद्र जिनमें होकर पसीना निकलता है बंद होजाँय तो वड़े रोग खड़े होजाते हैं ये छिद्र जब हीं वंद होते हैं कि जब मैल शरीरका उनमें भर जाता है इस मैलके दूर रखनेका यही एक उपाय है कि शरीरको जलसे धोकर सदा स्वच्छ रखना इसी तरह पशुओंको भी स्वेदके वहने वा रुकनेसे चैन और दुःख हुआ करता है इसलिये पोहोंको भी न्हवाते रहना चाहिये पशुओंके शरीर पानीसे धोकर साफ रखनेसे वे अति सुघड़ और सुरंग दीखने लगते हैं और उनको भी शरीर हलका मालूम होता है.

शरीर की बाहर की शुद्धी रखने के सिवाय

उनको भीतर से भी शुद्ध और निरोगी रखने के लिये पशुओं को अच्छा शुद्ध जल पिलाना और बलिष्ठ हरा सुस्वादु चारा खिलाना और उस के साथ खलकी सानी वा अन्न का घाटा वगैरह खिलाना अत्यावश्यकहै क्योंकि जितना शुद्ध जल और चारा होगा उतनाहीं उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा स्वास्थ्यके अच्छे रहनेपर उनको अधिक समय तक जीता रहना और दूध, घी आदि बलवाले पदार्थ का उत्पन्न होना निर्भरहै.

जल जो पशुओं को पिलाया जाय वह किसी वनस्पति के सड़े भागसे तथा मिट्टीके मिलनेसे गदला न होना चाहिये अक्सर ऐसा देखा जाता है कि जो पोहे नरहाई को जाते हैं वे मार्गमें धरती के खड्डों में भरे हुए पानीको पीतेहैं. इन थोडे २ जलसे भरे खड्डों में अक्सर सडे पदार्थ रहते हैं और उसमें पोहों के जल पीने को उतर-

नेसे नीचेकी मिट्टी पानी में घुलकर गदलापन उत्पन्न करदेतीहै इसहेतु यह पानी शुद्ध नहीं रहता और पीने में इस के संग मिट्टी के अंश जातेहैं इसलिये जहांतक हो सके पोहों के रक्षकों को चाहिये कि पशुओं को ऐसा पानी पीने से रोकें और जहां पिआऊ कुओं से भरी जाती हैं उन का शुद्ध पानी पिलावें.

ये पिआऊ केवल गरमी में भरने का रिवाज है और ८ महीने कोई नहीं भरता ऐसा नहोना चाहिये वरन् पिआऊ हमेशा भरनी चाहिये.जिन महाशयों के मार्गके किनारे बगीचे वा पुष्प-वाटिका हों उन को थोडे से व्ययसे पक्की पिआऊ बनवादेनी उचितहै.

ये पिआऊ ऐसे ढंगसे बनाई जाँय कि पैर चलने पर पुरका सब पानी पहिले पोहोंके पीनेकी कुंडीमें आवे और फिर वहांसे बरहेमें होकर वाटि-का वा वृक्षोंके सींचनेमें पहुँचतारहे ऐसा होनेसे

पोहोंको जो पानी पीनेको मिलेगा वह शुद्ध और ताजा होगा और पानीके बहावके कारण गदला नहीं रहेगा ऐसा जल पीनेसे पशुओंको आरोग्यता का एक साधन प्राप्त होजायगा.

जहां बगीचा नहीं होता और निरा कूआँ और तिदरी होतीहै वहां पासके गावों वा कसबोंके जमींदार अथवा उस कूँएके स्वामीको उचितहै कि समय २ पर कूँएसे पानीको भरवादें ताकि पशुओंको नरहाईसे लौटते समय ताजा और निर्मल जल पीनेको मिलसके.

गोशालामें रहने वाले तथा घरोंमें बँधने वाले पशुओंकोभी कूओंसे खींचकर ताजा पानी पिलाना उचितहै और पानी पिलानेका समयभी नियत करना अच्छा होताहै और फिर रोज उसी समय पिलाना उचित होताहै और प्रतिदिन तीन समय तो अवश्य पिलाना चाहिये.

अध्याय ३.

चारा.

जैसे मनुष्यके जीवन का आधार अन्नहै वैसेही पशुओंके लिये घास आदि चाराहै जो पशुओंको चारा न मिले तो उनका जीवन वैसाही दुःसाध्य होजाताहै जैसा कि मनुष्यका अन्नादि भोजन विना होताहै. जिस वर्ष मेह नहीं वरसता उस वर्ष घास, चरी, कडव आदि चारेकी फसल कम होजातीहै और सैकडों पशु भूखों मरजातेहैं क्योंकि हजारों ढोरोंका गुजर केवल घास परही होताहै और जव वह खानेको न मिले तो वे भूखेही प्राण त्याग देतेहैं जो धनवान्हैं वेही लोग अपने पशुओंकी रक्षा करनेको समर्थ होते परन्तु विचारे किसान तथा गरीबलोग जिनकी आमदनी मामूली गुजरके लायक होतीहै वे अपने पशुओंको भली रीति पालन नहीं कर सक्ते इस

दुष्कालमें उपस्थित दुर्घटनासे पशुओंको बचानेके लिये सरकार और जमींदारोंको चाहिये कि ऐसी बातोंपर अपना ध्यान विशेष देकर बंदोबस्त करते रहैं कि जिससे दशमांश भूमि प्रतिगाँव वा जैसा उचित हो इसलिये पड़तमें रही आवे कि उसपर गाँवके पशुओंके पालनके निमित्त घास चरी, कड़ब आदि उपजा करें और सूखाके समय घास आदि कूओंसे पानी देकर पैदा होसके और गाँवोमेंके सहस्रों पशु चारे बिना भूखों मरनेसे बचें.

घासके कई वर्ग हैं जो पशुओंके चारेके काम आती हैं-इसदेशमें तो दूब घास तथा बड़ी पूलोंकी घास काममें आती है- इन दोनों प्रकारकी घास का होना मेघराजपर होताहै जो वर्षा न हुई तो बस फिर घास का एक तिनका भी ढूंढे नहीं मिलसक्ता. जो चौमासाही न हुआ तो फिर चरी, कडब, ज्ुआर

आदि भी कहांसे होसक्तीहैं. केवल उन्हीं जगहों में कुछ चरी, कड़ब दिखाई देती है कि जहां कूओं तालावोंके जलसे किसान लोग करलेते हैं.

रहा भुस सो तो उन्हीं लोगोंके खर्चका पूरा पड़सक्ताहै कि जो लोग खेती करते हैं और पशु पालतेहैं. यह भूसा भी गरमीमें पशुओंके खिलाने में काम आताहै इसलिये चौमासा नहोने की अवस्थामें चौमासेमें काम देगा पर तोभी उनलोगों को जाडोंके दिनोंमें कुछ दिक्कत पड़ेगी.

दूसरे देशोंसे घासें इस देशमें लाई गई हैं कि जो एक दफेकी उगाई हुई तीन वर्ष तक बराबर पोहोंके लिय घास उत्पन्न होसक्तीहै. इन घासों में मुख्य घास ल्यूसर्न, क्लोवर, राई आदि हैं. इनके बीज मँगाकर बोना चाहिये. इन घासोंकी खेती करनेमें बीज डेढ तथा दो फुटके अन्तरसे बोयें जातेहैं और घासों को पांचवें छठे पानी दिया

जाताहै. जब घास एक वा डेढ़ फुट ऊंची होजातीहै तो तीन चार इंच जड़में छोड़ कर ऊपरका भाग काट कर पोहोंको खिलातेहैं इसप्रकार काट२ कर खिलानेसे एक दफे बोई घास तीनवर्ष तक बराबर चारादेती रहतीहै. ल्यूसर्न घासतो गुजरात काठियावाडमें बोया गयाहै और ऊपरके माफिक फस्ल ली गई है. इसको कई क्यारियोंमें बोतेहैं और जब एक क्यारीको काटकर पशुको खिलाते हैं उस अर्सेमें दूसरी क्यारीको बढ़कर तैयार होजातीहै. इस प्रकार करनेसे घासका दोर टूटता नहीं. विशेष हाल घासके भेदों तथा उगाने की रीतिका उस जगह लिखा जायगा जहां पशुओंके चरनेके लिये चरागाह बनाने और घासोंके बोने के विषय लिखेंगे इसलिये इस विषयको यहां ही बंदकरते हैं.

घासको अधिक वढने न देना चाहिये क्योंकि ज्यादा वढने से घास मेंका मिठासजाता रहता है और फिर पुष्टता देने वाले पदार्थ कम होजाते हैं.

जव घास में फूल आजाय तो फौरन् काटले. ऐसा कहतेहैं कि जो इस समय भी न काटी जाय तो वह कम पौष्टिक होने के सिवाय भूमि में का कस खैंच लेतीहै इस तरह हर साल भूमि में हानि होती रहतीहै.

घास को काटने के वाद वहुत दिनों तक उसे खुला न रखना चाहिये वरन् जितना होसके उसे जल्द सुखाले और धूप में जो रक्खी जाय तो उस को हलाते वा फेरते रहना चाहिये. हरी घासकी गंजी न वांधनी चाहिये क्योंकि वह सड़ उठती है इसलिये उसको पहिले सुखा लेनी जरूर है. जो हरी घास का ढेर वनाकर लगादिया जाताहै तो उसमें की घास सड़ उठती है और

को सांडरस तथा हाईड्रोजन गेस पैदाहोने से वह गंजी जलभी उठती है.

चरी. कडब.

घासके सिवाय पोहों को चरी, कडब आदिभी खवाते हैं. यह कडब विशेष कर जुवार की होती है. नाज के गुच्छे को तोड लेने के उपरान्त जो बच रहता है वह कडब कहलाती है और उसे पोहे बडी खुशीसे खाते हैं. इस में स्टार्च का भाग होता है जिससे मीठी होती है और मीठी होने से पौष्टिक होती है.

कडब को एकत्र करके रख छोडने की रीति जो प्रचलित है वह अच्छी नहीं है. कडब वा चरी को काटकर पूले बाँध धूपमें पटक रखते हैं इससे वे सब सूख जाते हैं. सूख जाने से कठोर होजाते हैं और फिर उन को पोहे कम खाने

लगते हैं. क्योंकि उनमें की तरी वा चिकनास जातारहता है कहीं कहीं ऐसा रिवाज है कि कड़बे पर गोमूत्र छिडक देते हैं पर इससे भी विशेष लाभ नहीं होता.

इस गोमूत्रके छिड़कनेसे कड़बमें खारीपन पैदा करते हैं कि पोहा उसको रुचिसे खालेवे. इसकी जगह जो पशुओंके दातोंमें नोन मलदियाकरें तो अतिउत्तम होताहै.

यूरूप वाले कड़बको ताजा बनी रखनेका जो उपाय काममें लाते हैं उसको इस स्थान पर लिखना विषय बाह्य न होगा. जिन लोगोंको यह अभीष्ट हो कि उनके पशुओंको हरा चारा मिले और उसको खाकर पशु हृष्ट पुष्ट रहें तो नीचे लिखे मुवाफिक कड़ब, चरी आदिको सहेज रक्खें.

एक गड्हा १७ फुट लम्बा ६ फुट चौड़ा और ६ फुट गहरा वा और किसी सुगम नापका खोदें और उसको भीतरसे ईंट चूने वा पत्थरसे

ऐसा करदें कि उसमें पानी वा हवा घुस न सके. जब जुवार मक्का आदि कटचुके तो शीघ्रही कडबकी कुटी करके दो वा तीन दिन थोड़ी धूप दिखाकर उस गडहेमें भरदो और पहिले छः वा सात इंचकी तह कड़ब की लगाओ और उसपर नोन छिड़को फिर इसी तरह कुटीकी लगाओ और उसपर भी नोन छिड़को इस तरह तह पर तह जमाते जाओ और मुँह तक गड़हेको भरदो ऊपर लिखे पैमानेके गड़हेके वास्ते १॥ऽ मन नोन लगताहै इसी हिसाबसे और गड़हों की बाबत नोन काममें लाना चाहिये. जब गड़हा भरचुके तो उसपर मिट्टी चढ़ादो और ऊपरसे गोल ढलवा मुँहबन्दी करदो कि जो पानी उसके ऊपरही बरसे तो सब ढलकर बहजावे. इस रीतिसे जो कड़व सँभाल कर रक्खी जाती है वह दो वर्ष तक हरी बनी रहती है बिगड़ती नहीं और मिठास भी वैसाही बना रहता है ऊपरके गड़हेकी बनी कडब

फी पोहे २० सेर काफी वाफी होती है. विशेष वर्णन इसका परिशिष्ट भागमें देखो.

जो इस रीतिसे कड़ब सावचेतीसे सँभाल रक्खी होवे तो गरमीके दिनोंमें वा मेहकी खैंच होजानेके दिनोंमें चारेकी बड़ी मदद मिलती है और हरा और मीठा चारा मिलनेसे दूध वाले पशुओंका दूध नहीं घटता और सब पोहों पर चारेकी कमीका कुछ असर नहीं होता.

इसके सिवाय बैल आदि को बल मिलेगा जिससे वे वर्षा के आरम्भ में ही हल के चलाने का काम अच्छा देंगे और मेहनत न सता सकेगी.

खर ।

प्राणीमात्र के शरीर की चरबी कमती होती रहतीहै और इस को बढ़ाने के लिये चिकनाई की जरूरत होतीहै. जितना तेली पदार्थ का उपयोग विशेष किया जायगा उतनाहीं पोहा पुष्ट

होगा; पुष्ट होने से दूध आदि भी बलिष्ट होगा. चिकनाई के अंश पहुंचाने के लिये सस्ता और सुलभ उपाय यही है कि खर पोहों को खिलाई जाय. पुष्ट करने के सिवाय इसमें यह गुण है कि गाय, भैंस में तो दूध अधिक होजाताहै और उन के सब अंगों को पोषण करती है.

कई जाति की खर होतीहै जिस में तिल, सरसों, दूंआ, अलसी आदि की पोहों को खिलाने में काम आतीहै. तिल की खर अच्छीहै पर इतनी सस्ती नहीं मिलती जितनी सरसों और दूंआ की होतीहै. सरसों की खर थोडी तेज चरफरी होतीहै पर पोहे अच्छी तरह खातेहैं. इस को गुड़, मोठ, मूंग आदि के आटे के संग उबाल कर खिलाना पोहों को अधिक रुचताहै. दूंआ की खल सस्ती होती है पर पोहों को विशेष लाभ दायक नहीं होती.

अलसी की खर भी खिलाई जाती है. विला-

यत में इस की अधिक खप है लाखों मन खर विलायत जाती है और वहां पोहों के खाने में काम आतीहै वहां के अनुभविक लोगों का कहनाहै कि अलसी के तेलके अंशों से पोहे ज्यादा बलवाले और दूध वाले होते हैं.

बहुतसे भागोंमें नारिअल, मूंगफली और खस-खस की खर खिलाते हैं पर इससे यहां क्या लाभ होसक्ता है यह हम नहीं कहसक्ते.

खर खिलाने में सानी करके कुटीके संग दीजाय तो पोहे अच्छी तरह खा लेते हैं.

पहिले खरको भिगोदेनी जब वह जलमें घुल-जाय तो सवेरे और सांझ दोनों वख्त कुटीमें मिलाकर पोहोंको खिलाना चाहिये इस प्रकार-पर खर देनेसे कुटीकोभी पोहे अच्छी तरह खा लेते हैं और दूध भी खूब होताहै.

खरके सिवाय गाय, भैंस को दूध के लिये नोले भी देते हैं. विनोलों को खवाने के लिये

भिगोदेना चाहिये और जब मुलाइम होजायँ तो फिर उन्हें कूट वा औटाकर खिलाना अच्छा होताहै बिनोलेभी खर, कुटी, भूसी, चोकर वगै़रहके संग खिलाये जाते हैं इनको पशुके बलके अनुसार न्यूनाधिक देतेहैं. बिनोलोंमें पुष्टि देनेवाले पदार्थ अधिक हैं ऐसा रसाइनिक विद्यासे जानने में आया है. बिनोलों मेंसे तेल निकाल कर उस की खर खिलातेहैं पर उसमें विशेष गुण नहीं रहता.

चूनी, भूसी, चोकर वगैरहभी पोह्रोंके लिये बलदेनेवाली चीजे हैं. अरहरकी दालकी चोकरमें तथा पूठेमें फासफोरस ज्यादः होताहै इस हेतु वह अधिक मांस बढानेवाले होतेहैं. गेहूं, यव चावल आदि अन्नकी भूसी वा चूनीमें भी पौष्टिक पदार्थ रहतेहैं. चावलकी भूसी के सिवाय चावलकी मांडी खिलाना भी अच्छा होता है. येहू

सब चीजें खर विनोले अन्न का घाटा वगैरह एक में मिलाकर अथवा सानी कर देनेसे, अधिक गुण करतेहैं.

इन ऊपर वर्णन की हुई वस्तुओंके देनेमें पशुकी अवस्था तथा व्यवस्था पर ध्यान जरूर देना चाहिये. जो पोहा पूरा २ मोटा होचुका होगा तो ये पदार्थ विशेष गुण न करेंगे वरन् इनमेंके वहुतसे अंश गोवर में निकल आवेंगे. परन्तु दुवले पोहों को ये अधिक गुण देंगे और जवतक वे मोटे ताजे न हो जायँगे तवतक उसके शरीर के मोटा करनेमें काम आवेंगे इस लिये दुवले पतले पोहों कोही ये चीजें अधिक खिलानी चाहिये.

अधिक दूध लेनेकी इच्छासे गाय, भैंसको इस प्रकार न्यार तथा अन्न देना. जहांतक वनसके हरी घास वा कुटी खिलानी वा और कोई पुष्ट

करने वाला चारादेना शराबकी भाट्टियोंमें जो यव आदि अन्नका कूचा बचताहै वह पोहोंको अधिक कामकी चीजहै ऐसाही गुण घाटमेंभी रहताहै अर्थात् नाजको उबालकर खिलानेसे वेही फायदे होतेहैं जो शराबकी भट्टीमेंका कूचा खिलानेसे होतेहैं.

खेडुत नामी मासिकपत्र जो भावनगरसे निकलताहै नीचे लिखे मुवाफिक चारा घाटा आदि देनेकी रीतिको वर्णन करताहै.

दूध देनेवाले जानवरोंको विशेष जलवाली चीजोंको खिलाना जितना पोहोंको जरूरत हो पानी पिलाना चाहिये मट्ठा जो पिलायाजाय तोभी दूध अधिक होताहै. जो यह इच्छाहोय कि बहुत दूध न होकर थोड़ा पर कसदार होतो गाय,भैंसको मूंग, मोठ, बिनोले, और कडब वगैरह बलवान् चीज खानेको देना चाहिये या उबालाहुआ अनाज खिलाना चाहिये चरबी बढाने वाले

पदार्थ जो दूध देने वाले पोहोंको खवाये जायँगे तो माखन ज्यादा होगा. चरबी बढाने वाले ये पदार्थ हैं । खर, सत्तू, तिल, अलसी, मक्का का चून इत्यादि. ऐसा अनुमान हुआ है कि ४० तोले ये पदार्थ खिलानेसे १४ तोला दूध ज्यादः होताहै. जो मक्खन न निकालना मंजूर हो तो गाय को १ सेर खल खिलानी चाहिये पर जो मक्खन लेना होतो आध सेर खर काफी होतीहै. दही अच्छाहो इस नियतसे गाय, भैंसको उडद, मूंग, मोठ, अलसी वा अलसीकी खर उबालकर देना चाहिये. इन चीजोंमें लेग्यूमेन (दालका सत्व) और एल्यूमेन (सफेद बल्क) अधिक होताहै. जो गाय, भैंसको अन्न उबालकर और उसमें मट्ठा मिलाकर दियाजाय तो साल भरमें १०० रतल दूध अधिक होगा ऐसा कहतेहैं.

इस सबका सार यहहै कि खर, बिनोले, कडब

और उबालाहुवा अन्न (घाटा) और मट्ठा देनेसे दूध, घी आदि अधिक और अच्छे होते हैं. खाने की चीजों को चूरा करने वा दलकर महीन करने उबालने में और उनकी सानी करने में अधिक गुणहै और यह पौष्टिक भी होताहै.

जो गाय, भैंस, बैल आदिको १ सेर के अन्दाज सरसों के बीज खिलाने से उनके गोबरमें नाइट्रोजिन विशेष होताहै और वह गोबर खातके बडे उपयोग का होताहै. इसके सिवाय जो और चारा वा दाना दियाजाय और फिर उनको सर्द जगह वा हवा में रक्खा जाय और उनसे मशक्कत भी पूरी लीजाय तो भी उनके गोबरमें खातके उपयोगी पदार्थ बहुत मिलैंगे.

जो पशुओं को मादिल हवा में रक्खे और थोडा खानाभी दें परन्तु मेहनत व मशक्कत लीजाय तो वे मोटे ताजे हो जातेहैं परन्तु

खुराकमें मक्का, मोंठ, उड़द वगैरह जरूर होने चाहिये. पशुओं को जो तेल, घी और चरबीवाली चीज खिलाई जाँय तो वे ज्योंके त्यो मोटे ताजे बने रहते हैं और इसलिये मक्का, अलसीकी खल, शरजम आदि उत्तम वस्तु हैं.

मेहनत वा मशक्कत करने वाले पशुको जो आलू खिलाये जाँय तो वह शीघ्र थक जाताहै और जो चना का दाना सूखा खिलाया जाय तो मेहनत में मजबूत रहताहै.

चारेके अकालमें चारा।

जब कभी वर्षाऋतु में वृष्टि नहीं होती तो घास और चारे की बड़ी तंगी किसानो और जमीदारोंको आपड़तीहै और उस तंगीके कारण हजारों पोहे प्रतिदिन नष्ट होते रहतेहैं ऐसे समय में पशुओंको भूख मरेसे बचानेके लिये जो चारे की तलाश बहुत काल सेथी वह अब अच्छी

तरह ज्ञात होगई है कि उसको किसान सुगमता से अपने अपने खेतों की मेड़ पर बोकर पैदा कर-सक्ते हैं यह चारा थूहरका पेड़ है और इसको गुज-रातमें हाथियेथूर कहतेहैं अर्थात् वह थूहर जिसमें गाठें होती हैं. किसानों को उचित है कि खेतकी मेड पर इस थूहरको जरूर बोया करें क्योंकि इससे एकतो खेतमें जानवर न धसेंगे और दूसरे चारे की तंगीके समय इसकी कुटी कर पोहोंको खिलानेसे वे काम के बने रहेंगे यह थूहर एक पशुके लिये १० सेरसे २० सेरतक काफी होगा.

बेरिया की पत्तीको सुखा रखते हैं और फिर गर्मियों के दिनोंमें पोहों को खिलाते हैं.

एक घास "परी" नामक होती है और वह खरी जमीन में पैदाहोतीहै उसको चारे की तंगी के समय खिलाते हैं.

पीले फूलका ऊंटकटा,खजूरी, खाखरा (केसू की पत्ती) और तमरके पत्ते भैंसों के खिलाने में काम आतेहैं.

एक 'कुर' नाम का अनाजका पेड़ होताहै उस को चारेके काम में लातेहैं जो यह अनाज एक वा दो बीघामें बोदियाजाय तो उसकी फसलसे ७ वा ६ पोहोंका गुजर चल सक्ताहै इस अनाजके वृक्षको फसलमें पानी बहुत देना पड़ता है और एक दफे पानी दियाजाय तो फिर एक अठिवा-डिये में १ हाथ ऊंचा हो आताहै इस हिसाबसे जब चाहो तब थोड़ा २ काट कर पोहों को चरा-दिया और फिर पानी दिया तो फिर तैयार होजा-ताहै मगर इससे भी बढ़कर विना खर्च और दिक्क-तके तो थूहर ही होसक्ता है.

अध्याय ४.

रोग निदान और चिकित्सा.

पूर्वके अध्यायोंमें खेती सम्बन्धी पशुओंकी मावजत और उनके चारे दानेके विषय लिख आये अब इस स्थान पर वे उपाय लिखते हैं कि जिन के ध्यानमें रखनेसे किसान ज़मींदार वगैरह अपने पोहों में किसी रोग का होना जाने तो पशुओंके इलाज करनेहारोंको बुलानेसे पूर्व रोगको बढ़नेसे रोके रहैं.

प्रथम तो सर्व को उचित है कि जैसे मनुष्य स्वच्छतासे रहता है और स्वयम् रोगसे बचनेके उपाय सफाई तथा मिताहार इत्यादिका ध्यान रखता है इसी प्रकार पोहों के आरोग्यताकी बाबत विचार रक्खे.जो पोहे बीमार हो जाँय तो पाठकगण भली प्रकार जानतेहैंकि किसानों को कितनी मुसी- बत उठानी पड़ती है बैलों के बीमार होनेसे खेती-

का सब कार्य बन्द हो जाताहै और गाय, भैंस आदि दूधवाले पशुओंके बीमार होनेसे किसानोंकी और उनके बालबच्चोंकी स्वास्थ्यतामें कितना अन्तर पड़जाताहै इसहेतुसे भी पशुओंकी मावजत करते रहने परभी रोगोंसे बचानेके लिये उनके उत्पन्न होनेके कारण, लक्षण और उपाय जानने भी जरूरी हैं. इसहेतुको ध्यानमें रखकर सर्व साधारणके ज्ञानके लिये और मूक पशुओंको दुःखसे बचानेके परोपकार रूप कार्यको विचारकर इस स्थान पर रोगोंके निदान वा चिकित्सा आदिको संक्षेपसे लिखते हैं.

जो इस रोगाऽध्यायको पूरा २ लिखें तो एक बड़ा भारी पुस्तक बनजाय परन्तु इस छोटीसी पुस्तकमें लिखना इसका अभीष्टहै इसहेतु सूक्ष्म रीतिसे उन रोगोंकाही वर्णन यहाँ किया गया है जो मुख्य हैं और जिनके इलाजका जानना अत्यावश्यक है

शीतला वा विस्फोटकरोग.

यह रोग चेपी है अर्थात् एक रोगी पोहेका चेप जो दूसरेके लगजाय तो उस दूसरेके भी यह रोग उत्पन्न होजाताहै. जब यह रोग किसी पोहेके लगताहै तो इसके चिह्न १ दिनमें दीखने लगजाते हैं.

लक्षण—प्रथमतो पशुको ज्वर होआताहै और शरीर तपने लगता है.

पहिला दर्जा रोगका यह है कि सुस्ती बढती है पोहा काँपने लगता है रोयें खड़े होजाते हैं. मुँह गर्म होजाताहै सूखी खाँसीकी रमक भी मालूम पड़ने लगती है. कब्ज होताहै और आम गिरती है भूख कम होजातीहै, पियास लगती है पुट्ठों पर एेंठन होती है, सब पैर सिमिट जाते हैं दाँत बजने लगतेहैं और नाड़ी शीघ्रचलती है.

दूसरा दर्जा—कान, शींग, पुट्ठे और दाँत कभी

गर्म कभी सर्द मालूम होते हैं श्वास होजाताहै जुगाल बंद होजाती है भूख उडजातीहै आँखों मेंसे मैला पानी बहताहै. कमर पसली में दर्द होताहै ज्वर और प्यास बढजातीहै गले में निगलते दर्द होताहै आँव ज्यादा गिरतीहै जीभ और मुँह में छोटे २ लाल दाने और कांटे पड़ जा-तेहैं कभी २ आँव के साथ रुधिर भी आताहै पे-शाब और पाखाने की जगह लाल होजातीहै पेट में मरोड़ा होताहै.

तीसरे दर्जे के लक्षण—नाक और मुँहमें से चिकना पानी बहै श्वास में दुर्गंधि होजाय मुँह के भीतर और नाकमें पीपडी(खुरंट से) जमजाय और पीली चाँदी पड़जाय और दाँत हलने लगें. दस्त जारी होजाते हैं और गोबर में दुर्गंध बढ़जाती है.

सूजन होआतीहै सुस्ती बढ़ती जातीहै गले में दर्द भी जोर पर होताहै. शरीर ठंढा हो जाताहै शींग, कान, पैर और मुँह भी ठंढे हो जाते हैं. बेहोशी होतीहै श्वास भी रुक कर चलताहै नाड़ी क्षीण होती जाती है और परिणाम जानवर ६ घंटे में मरजाताहै कभी २ गर्भ होतो गर्भ भी गिर पड़ता है.

जो कंठ की दोनों ओर छाती और कंधों पर तथा पसलियों पर दाने जोर से निकल आते हैं तो बचने की आशा हो जातीहै परन्तु दाने हमेशा नहीं निकलते जो चमड़ी के ऊपर तो दाने निकले नहीं और पेट में मरोड़ा सा बना रहे तो जानवर जरूर मरजाय.

यह रोग ज्यादह से ज्यादह १६ दिन रहताहै और अक्सर तो ३ से ९ दिवसकी अवधि होतीहै.

इलाज—बल बनाए रखने के लिये खुराक अच्छी और हलकी देनी चाहिये जो कब्ज मालूम

हो तो पेट साफ करने की दवा देना चाहिये. और इसलिये सेंधानमक अथवा एप्समसाल्ट ४तोला से७॥तोला तक देना चाहिये. दिन में दो वा तीन दफे गर्म पानी और तेल की पिचकारी लगानी. इस से पेट साफ हो जायगा. यदि दस्त आवें और रुधिर के २४ घंटे तक आतेही रहें तो फिर दस्त बंद की दवादेना चाहिये.

कपूर १२ मासे धतूराके बीज ४ मासे, शराब १० तोला शोरा १२ मासे चिरायता १२ मासे इन दवाओंको खूब पिलाकर रोगके प्रथमदर्जे में देनी.

जो दूसरे दर्जेके लक्षण शुरू होजायँ और दस्त बंद नहों तो ऊपरकी दवामें माजूफल १२ मासे और पीसकर मिलाना और प्रति १२ घंटे देते रहना चाहिये जबतक कि दस्त बंद नहों. दस्त बंद होने पर दवा भी बंद करदेना उचित होताहै.

खुराक पहिले दर्जेमें चावलों को नरम उबाल

कर खिलाना चाहिये जबतक दस्तजारी नहीं पानी खूब पिलावे परन्तु दस्तोंके शुरू होनेपर पानी बिल्कुल बंद कर देवे और उसकी एवजमें चावलका मांड पिलावे. दस्तबंद होने पर चावल और हरा चारा खानेको देना चाहिये और संचलनोन का टूक उसके पास रखदेना जिससे वह कभी २ उसको चाटलिया करे.

जो भेड बकरी वगैरह छोटे जानवरों में यह रोग हो तो ऊपरकी दवाकी $\frac{1}{8}$ मौताज खिलानी चाहिये.

इस रोगके न फैलने देने के उपाय जरूर करने जाहिये.

२ एन्थेरक्स फीवर.

ज्वर और सूजन.

यह रोग भी चैंपी है परन्तु शीत देशों में यह चैंपी नहीं होता. इस रोगमें कहीं न कहीं चमडी

सूजजाती है अर्थात् यातो कमर पर वा गले वा जीभ पर.

कारण—सूखा वा सड़ा हुआ चारा बराबर खिलानेसे और फिर हरे खेतों में छोडदेनेसे बीमारी होतीहै. छोटे बच्चों में विशेष होताहै और जो बहुत मोटे ताजे पशुहैं उनको भी होताहै.

दिनमें तो तेज धूपमें रहें और रात को ठंढी हवा लगने से इसकी उत्पत्ति मानते हैं और पशु-शाला में सफाई न होना भी एक कारणहै.

लक्षण रोगके—देखते २ पशु को यह रोग लग-जाता है अर्थात् एक दो घंटे में पशु बीमार होजाता है. सुस्ती एक दम बढ़जाती है और सब अंग लथड़ पथड़ होजाता है हाथ पैर जकड़ जाते हैं थोडी देरमें पीठ, मुँह, गले जीभ वगैरह स्थान पर सूजन दीखने लगतीहै और जो उस को दबाया जाय तो ऐसा मालूम होताहै कि उसमें हवा भरी हुई है गला और फेफडा अधिक सूज

जातेहैं श्वास रुकता है इसके सिवाय इसका असर अण्ड,तिल्ली,आमाशय आदि पर भी होता है.जब कोई अण्ड सूजताहै तो हलना चलना वंद होजाताहै. स्पर्शज्ञान नहीं रहता. सूजन वहुत जल्द बढतीहै और देखते २ थोडे ही घंटों में जानवर मरजाताहै.

इलाज—जो सूजन अधिक फैली हुई हो और फेफड़ों में रुधिरके भरनेसे श्वास टूटकर आता हो तो वह असाध्य रोग होजाताहै. जो सूजन होनेसे पहिले बेचैनी मालूम पड़े तो पहिले जुलाब नं ३ वा ४ देना प्रतिदिन ८ घंटे के अंतरसे एक वा दो घंटे के अन्तरसे ताडी ५ तोला और कपूर ८ मासे चावलका माड २तोला में मिलाकर देना कोई २ फस्त खुलवाते हैं परन्तु ये उपाय पहिले दर्जे मेंही करने चाहिये क्योंकि रोग के बढ़ने पर रुधिर काला पडजाताहै. इस रोग

वाले को छाया में रखना चाहिये और स्वच्छ पानी पिलाना नोन मिली हुई खुराक देनी.

इस रोग में एक को बीमार होने से उसके साथी दूसरे पशुभी बीमार होजाते हैं इस हेतु उन को नोन और शोरा थोडा २ मिला हुवा पानी पिलाते रहना चाहिये और चारा शुद्ध और स्वच्छ खिलावे गथा गले के नीचे लटकती हुई चमड़ी को नाथ दे.अथवा भले चंगे जानवर को यह नुस्खा दियाकरे कि जिससे रोग फैलने न पावे सांभरनोन१०तोला गंधक१॥तोला सोंठ १।तोला गुड७॥तोला गुन गुनापानी.ऽ२सेर यह औषध मिलाकर ठंडी होनेपर देवे.

३ प्लूरोन्यूमोनिया.

फेफडों का रोग.

यह रोग फेफडों और छाती में होताहै और

उड़कर भी दूसरे पोहों को लग जाताहै. सब देशों में सब उमरके पोहोंको विशेष कर गाय, भैंसको होताहै.

अवधि इसकी १ माससे लेकर ४ और उससे भी अधिक मासों तकहै. परन्तु रोग लगनेके १ मास पीछे चिह्न दीखने लगते हैं.

कारण रोगहोनेके—चैंपीरोग होनेसे जिस पोहे के रोगहो उसके संग रहनेसे यह रोग होजाताहै पोहे को जहरदार खुराक मिलने तथा चैंपी पानी पीने और श्वास में रोगके परमाणु जानेसे और शरदी लगनेसे यह रोग उत्पन्न होजाताहै.

लक्षण रोगके—शरीर गर्म होताहै कम जोरी बढती है, नाड़ी जल्दी चलती है, कभी कभी जोरसे हायसी मारताहै, सूखी खाँसी आतीहै, दूधके पोहे दूधसे उतर जातेहैं, ज्वर होआताहै भूँख जातीरहतीहै, दुर्गंधित श्वास बाहरनिकलता

है श्वास बढ़ जाताहै और श्वास लेने में कठि
ताभी होतीहै, नथुनों को बढाकर श्वास लेता
छाती में दर्द होने पर उसी ओर दबाव रखक
बैठताहै, कभी २ पेट फूला दीखताहै, नाड़ी कभ
जोरदार और शीघ्र चलती है और बलहीन म
होजातीहै आंख, नाकमें से पानी बहताहै, सीं
ठंढे होजाते हैं, चमडी सूखकर तनने लगतीहै
खाँसी शीघ्र २ आतीहै शरीर धुनने लगताँहै ज
पसलियाँ पर उँगलीसे दबाया जाय तो उसक
तकलीफ होतीहै, अंतमें दस्त होजाते हैं, फफड़
भारी होता जाताहै, जिससे श्वास में कठिनत
होजातीहै और फिर पोहा मरजाताहै. जो रो
प्रबल होताहै तो अधिक से अधिक १२ दिव
में परन्तु जो हलका होताहै तो छःमास त
रोगी मरजाताहै.

उपाय—यह रोग असाध्य होताहै इससे बचन

बहुत कठिन है परन्तु तौ भी उपाय जरूर कर्त-व्य है. पोहेको ऐसे स्थानमें रखना चाहिये जहाँ शुद्धवायु आता जाताहो और हर बातकी सफाई हो. कब्ज बहुत हो तो हलकी दस्तकी दवा देनी उचित है श्वासमें तकलीफ विशेष होतो गर्म पानीसे छातीको बफारा देना. अजीर्ण होने पर गुड ५तोला नोन सांभर ५ तोला अलसीके मांडमें दिनमें एक वा दो बार देना. जो कमजोरी हो तो २ रतल मांड चावलमें ५ तोला ताडी मिलाकर दिनमें एक वा दो दफे देना चाहिये.

खुराक—हराचारा और चावलका मांड़ और स्वच्छ पानी देना अनुकूल पड़ता है.

४ डायरी या अतीसार.

इस रोगमें दस्त होजाते हैं और कभी २रुधिर भी मिला हुआ दीखता है. पाचन क्रिया और आंतों का व्यवहार बिगड़ जानेसे यह रोग होता है.

कारण—गर्म चारा खाना और गदला पानी पीना जिस भूमिमें पानी भरा रहताहो और सड़जाताहो ऐसी भूमिकी घास आदि चारा जब चरनेमें आता है तबभी यह रोग होजाताहै. जो पोहेको जुलाव की औषध विशेषतामें खिलाई जाय तो भी और हद्दसे ज्यादः अन्न खिलाने सेभी यह रोग होताहै. धूपमें बहुत रहनेसे भी इस रोगका कारणहै. चौमासेमें पहिलेही मेहसे जो घास उपज उठती है उसका चरना रोगका घर होताहै.

लक्षण—पहिले बार २ हवा निकले,फिर पानी कासा पतला दस्त होताहै. भूंख बनी रहतीहै परन्तु कोई समय जुगाल नहीं करता जो बहुत दिन तक दस्तोंकी बीमारी होजाय तो फिर पोहा दस्तके साथ करांझताभी है. पेटमें दर्द होताहै और गोबरके साथ रुधिर भी आताहै.

उपाय—चारे और पानीमें फेरफार करना अत्यावश्यक है और शुद्ध हलका और नमकीन चारेका इन्तजाम करना मुख्य उपाय है. पाचन शक्तिको बढाने वाली ओषधिको देना चाहिये और दस्त बंद करनेके लिये ये ओषध आधसेरचावल के मांडमें पिलाना चाहिये-चाकमिट्टी २॥। तोला गोंद केनो १२ मासे अफीम ४ माशे चिरायत १तोला और शराब १ छटाँक— परन्तु जो पेटमें दर्द होतो१२मासे तक अफीमकी मिकदार करदेनी चाहिये.

जो इस औषध परभी दस्त रहें तो नीचेकी औषध देना चाहिये.

खडिया(चाक)८तोला कत्था सफेद२॥तोला सोंठ१।तोला अफीम ४ माशे शराब८तोला पानी १॥ पाव में सब को मिलाकर देना चाहिये.

५ खुर वा मुँहपका.

यह रोग चैंपी है ज्वर आताहै और मुँह

पैर और थनपर फोडे होतेहैं. कभी मुँह पकत है और कभी खुर और कभी आगे पीछे दोन पकते हैं.

इसरोग वाली गाय, भैंस, बकरी, भेड आदिका दूधपीने से मनुष्य को भी चैंप लगजाताहै. पोहोंमें यह रोग कभी २ सड़ी गली खराब जगह में रखन से भी होजाताहै. रोगवाले पोहेको जो बछड़ा चूखे तो उसको भी रोग होजाताहै. रोग के प्रकट होने की अवधि एक दिनसे ३दिनतक की है.

लक्षण—ठंढ से ज्वर हो, मुँह पैर और सींग गर्म रहें, मुँहमेंसे लार बहे, मुँह और पैर पर फोडे निकलें, गाय के होताहै तो उसके थन पर रत्ती बराबर की फुंसिया निकलपडें कोई समय नाक और मुँह की खालपर फोड़े होजातेहैं वे फिर २ दिवसमें फूट जातेहैं और फिर लाल चतके पड़ जाते हैं. जीभ, तालू और मसूढों में भी रोग होजाताहै. खुर और चमडी के जोडपर फोडेहो

चारा वा दाना खाना बंद होजाताहै और लंगडाने लगताहै. गाय भैंस के थन पर फोड़े होनेसे फिर दूध दुहने नहीं देती और इसी कारण फिर थन सूज कर फटने लगताहै. ऐसी गाय भैंस के थन को छूकर निरोग के थन न छूने चाहिये नहीं तो उसके भी यह रोग होजाना सम्भव होताहै.

रिंडरपेस्ट (शीतला) और इस रोगमें इतनाही अन्तर है कि शीतला रोगमें पैरनहीं पकते और दस्त होजाते हैं.

उपाय—पोहे को बांध रक्खे, ज्वर के कमहोने की ओषधि देवे, सफाई की आवश्यक्ता रहतीहै.

गर्म पानी से मुँह धोना और फिर दिनमें दो वा तीन दफे इन दवा से मुँह धोना चाहिये.

फिटकड़ी १। तोला पानी ऽ॥ सेर.

गर्म २ पानी से पैर खुरी को अच्छी रीतिसे

और कमीला बकरी की चरबीमें मिलाकर लगाना चाहिये.

६ तालू और जीभ पकना.

इस रोगमें तालू में फोड़ा होकर चांदी पड़जाती है और यह रोग चैंप से दूसरे पोहों में भी फैल जाता है. इस रोगवाला पोहा जिस पानी को पीवे उसको दूसरा पोहा पीले तो उसके भी यह रोग लगजाता है. इससे पानी पिलाने में होशयारी जरूर रखनी चाहिये.

कारण इस रोग का—खाना अच्छी तरह न पचना और कब्ज भी है इनके सिवाय जो गरम चीजें खिलाई जाय तो भी जीभ और तालू लाल कर २ हें और फिर फोड़ा होजाता है. जब जीभ के पड़ फोडा होजाताहै तो पोहा चारा नहीं ... रोग और पानी भी पीने में कष्ट होता है. जीभ के पकेन

के कारण पशु खा पी नहीं सक्ता और श्वास लेने में भी कष्ट होताहै इस हेतु दिन २ कृष होता जाताहै और कोईक समय तो मरभी जाताहै.

इलाज तालू पकनेका।

पहिले जुलाब नं॰१ देवे–

टांकण खार ४ मासे शहद १ तोला मिलाकर दिन में तीन दफे चांदी पर लगावे.

फिटकरी ४ मासे कांटेदार मोयुं ४ मासे सहद १॥ तोला को मिलाकर चांदी पर लगावे अथवा कत्थे की बुकनी उसके ऊपर बुरकें अथवा तीन वा चार दिन मीठा तेल एक सेर रोज पिलावे.

अथवा चना की दाल २॥ सेर शक्कर १ सेर दोनों को ५ सेर पानी में भिगोकर ओस में रक्खे और फिर ऽ॥ सेर दाल और शरबत रोज पांच दिन तक खिलावे.

जीभ पकनेका इलाज ।

फोड़े को चीरकर रुधिर निकाल दे और फिर हलदी १ तोला समुद्र का नोन १ तोला हड १ तोला इन को वारीक पीस जीभपर मले. अथवा काष्टिक जीभपर लगाना पूँछके अखीर पर बालों के बीचमें दाग देने से भी आराम होताहै.

कुम्हारके घरकी और उस की चाक चलाने के पानी की हंडियाकी मिट्टी लाकर उसको बाहर की तरफ जावडे पर चुपड देते हैं.

७ कंठकी सूजन.

यह रोग बुरा होता है इसमें कंठ जीभ आदिमें सूजन होजातीहै और फिर मुँहमें से रुधिर मिला-पानी टपकने लगता है. अवधि इसकी अधिक से अधिक २ वा ३ दिनहैं.

लक्षण—ज्वर, गलेमें सूजन, कानों और जावडों

के नीचे भी सूजन होती है, लार बहती है, निगलने और श्वास लेने में दुःख होता है, श्वासके संग खर-खराट होता है, और दुर्गंधि आती है, जीभ बाहर निकल आती है और लाल २ चकत्ते पड़जाते हैं नासूर पड़जाने से पीप भी निकलने लगताहै. बीमारीके बढ़जानेमें श्वास घुटकर मर जाताहै.

उपाय—इलाजमें देर न करै नहीं तो पशु बचता नहीं १०० में ८० तो मरही जाते हैं. जो निगलने में दुःख नहोताहो तो पहिले तेज जुलाबकी दवा देवे और फिर कंठ का इलाज करे पहिले तो गलेके आस पास कानकी जड़से दूसरे कानकी जड़तक और जावडोंपर गरम लोहे से दाग़दे और प्लास्टर की दवा को लगावे जो फफोले पड़ें तो जाने आराम होगा और उस का मुँह फिटकरी ९ मासे गुड़ १० तोला पानी आधसेर से खूब धोडाले और पतले

मांड में नोनगेर कर और उसमें धतूरेके बीज ४। मासे कपूर १२ मासे ताड़ी १० तोला मांड १ से में मिलाकर थोड़ी २ पिलावें, और पोहे के मुँहमे गंधक या रालकी धूनी देना भी अच्छा होताहै इस रोग में किसी शालोत्तरी वा जानवरों के डाक्ट रको शीघ्रही बुलाकर इलाज कराना अच्छा होता है.

इन्द्रायन २ तोला दोनों जीरे ६ तोला मीठे इन्द्रयव २ तोला हलदी २ तोला रूमीमस्तगी १ तोला वंशलोचन १ तोला सोंठ कालीमिरच एक पाव सबको कूट छान कर थोड़ा २ रोज खिलावे.

८ कमल वायु.

तापतिल्ली के बढ़ने से यह रोग उत्पन्न होताहै.

लक्षण—आँख और मुँहपर की खाल पीली पड़ जातीहै गोबर सफ़ेद रंगका होता है कब्जभी रहती

है ज्वर हो आताहै मूत्र पीला और आलस्य भी रहता है.

उपाय—एप्समसाल्ट १५ तोला सोंठ २॥ तोला मुसव्वरकाअर्क ५ तोला चावल का मांड १ सेर में पिलाना जब दस्त देने से पेट साफ़ हो जाय तो फिर गरमी छांटने के वास्ते चिरायता २ ॥ तोला शोरा २ तोळा चावल के मांड में मिलाकर दिनमें दोदफे देना चाहिये.

९ सींगझड़ना वा सड़ना.

यह रोग गाय वा बैलके होता है सींग में चोट लगने से और रुधिर विकार से यह रोग उत्पन्न होताहै.

लक्षण—पहिले सींग की जड़ में एक मसा उठता है वह धीरे धीरे बढ़ता जाताहै और फिर पक-उठताहै दुःख के मारे पोहा अपने सींगो को पछाड़ता है इस फोड़े से सींग की जड़ का मांस गलता

जाताहै. भूख कम हो जातीहै इसी कारण दुर्बलता बढ़तीहै. घाव में से रुधिर बहने लगता है जब मसा गिरजाताहै तब दुःख घटताहै परन्तु मसे कासद्भाव एक तरफ से चलकर दूसरी ओर जाताहै इस से इलाज करने में कठिनता पड़ती है.

उपाय—सडांद की दुर्गंध दूरकरने को कोयला की पोटली उस स्थान पर बांधना चाहिये. शिरसे चार तसू ऊपर सींग के बीच में आड़ा सुराख कर उसके भीतर १ तोला संखिया पीस कर भरना चाहिये वा इसकी जगह खांड २तोला रसकपूर१ तोला मिलाकर भरदेना योग्यहै. अथवा सींग को दो तसू छोड़ कर ऊपरका सबभाग काट डालना चाहिये और आंवल पेड की जड़ की छाल महीन पीसकर ऊपर दाब देनी और चमड़े की थैलीसी बना कर सींगके ठूंड को कसकर बांध देना प्रति

तीसरे दिन धोकर छाल बुरक के फिर बांध देना जहांतक आराम नहो यह उपाय करते रहना.

जो सींग टेढ़ा होगया हो और उस में दरद भी होताहो तो सींग को काट डालना चाहिये और भीतर से मसे को भी काटगेरे और फिर उसपर संखिया ३ भाग हिंगलुक १९ भाग और सुपारी की राख ७ भाग लेकर पानी में पीस लुगदी बनाकर उस जगह बांधदेवे. इस से जो कुछ मसे का खराब भाग रहाहोगा वह जल जावेगा दूसरे दिन लुगदी खोलकर गरम पानी से घाव धोदे और जो कुछ और भाग खराब मांस का दीखे तो फिर वही औषध बांधे जब सब मांस कटजाय तब नीलाथोथा वा फिटकड़ी के पानी से धोकर सफ़ेद मोमके मल्हम का फावा चढ़ावे और दिनमें तीन वार धो २ कर फावा लगातारहै.

जो सींग इस रोग में गलकर गिरपड़े तो

वडागडु नोन पावभर और टेंटी की कोंपल५ तोला दोनों को पीस लुगदी उस पर रख ऊपर से पट्टी बांधे अथवा मँजीठ पाव सेर महीन पीस मीठेतेल पावभर में गरम करके सींग पर चुपडे और ऊपर से पट्टी बाँधे और दूसरे तीसरे पट्टी बदलतारहै.

अथवा सिंदूर पावसेर मीठातेल५ तोला गरम२ चुपड़कर पट्टी बाँधे—

१० पेटफूलना वा कुलंज.

इस रोगमें पेट फूलता है, शूल चलता है, पशु के हाथ पैर ढीले पड़जाते हैं और वह लोटता तड़फडाता है। इन्द्राइन के फल १॥ छटांक लेकर कूट जलमें औटावे और ठंढा होने पर छान कर पिलावे.

एरंड का तेल एक पाव और गायका दूध १ सेर में मिलाय के गरम गरम पिलावे तो दस्त होने से फूल मिटै

खारीनोन ९ तोला और गुड एक पाव दोनों को १ सेर पानी में औटाय पशु को पिलाने से भी आराम होताहै—

आक के फूल २ तोला सरसों का तेल२० तोला दोनों को मिलाय कर पिलादेने से पेट पटक जाता है—

सोंठ २ तोला हींग४मासे गुड़ में मिलाकर एक गोली बनाकर खवावे.

११ पेटमें आँव पडना और रुधिर गिरना.

यह रोग अतीसारके पीछे होताहै और मुख्य कारण तो कठोर चारेका चरना गदला पानी पीना और सरदी गरमी होजानेसे है.

लक्षण—सिवाय अतिसारके किसी और कारण से यह रोग होता है तो कुछ ज्वरांश हो आताहै और घड़ी २ गोबर करता है जिसमें छूंछ वा गांठ

पानी के संग आँव और रुधिर भी मिलाहुआ निकलता है, पेट में मरोड़ा होताहै. इस रोगमें मुँह के भीतरकी झिल्ली और आँखों में पीलापन दीखने-लगता है.

इलाज–पेट को गरम २ पानी में फ़लालेन वा कम्बलके टूक को भिगो २ कर सेंको घंटे आध घंटेतक जब खूब सिकजाय तो कपड़ेसे पोंछ कर सरसों का तेल १ तोला टाडपीनकातेल ८ मासा मिलाकर उस स्थान पर मर्दन करो.और जो मरोडा अधिक हो तो कमर पर रस्सी कसकर बांधो और खूब गाढ़ा मांड १सेर अफीम १२ मासा मिलाकर गुदा द्वारा पिचकारी से पहुँचाओ. परन्तु दो या तीन दिन तक कोठेको नरम रखना जरूरी है. फिर धतूरेके बीज ४ मासे कपूर १२ मासे ताड़ी १० तोला मिलाकर मोड़ १ सेर में पिलाओ.

इन औषध के देने से जो मरोड़ा बंद नहो तो सफेदा १।। मा. चाकमिट्टी २।। तोला अफीम १२ मासा गोंड मॉंड में देना चाहिये.

खुराक में पहिले तो चावलका मांड ही देना उचित है जब दस्त बंध जाय तब आधे चावल और आधी अलसी को पानी में खूब उबालकर उस का मांड़ खिलाओ.

१२ शिरमें चक्कर.

इस रोगमें शरदी पहुँचने से मस्तकमें चक्कर आते हैं और चित्तभ्रम सा हो जाताहै. खाना और पानी कम होजाताहै दूध वाले जानवर को होनेमें दूध नहीं देता इस रोगमें पशु मरता नहीं.

इलाज— शिरपर कपड़े की चार तह रखकर ऊपर से गरम पानी गेरना दिन में तीन दफे. अजवाइन डेढ़ पाव गुड़ सेरभर में मिलाकर तीन दिन खिलाना चाहिये. मिर्च १।। तोला पानी

पावभर में पीसकर पिलादेने से रोग जाता रहताहै अथवा पशु के मस्तक पर त्रिशूलके आकार में दाग़ देना या तेलको खूब गरम कर रुई का फोआ उस में भिगोकर गरमागरम मस्तक पर चिपका देना ऐसा करने से भी आराम होजाता है. अथवा लालमिरिच ५ तोला सोंठ २ ॥ तोला वायंविडंग ५ तोला इन्द्रयव२॥ तोला और मामे जवो ५ तोला को पांच सेर पानी में चढ़ाओ और जब २ सेर रहे तब उतार ठंढा कर सात दिनतक पिलाने से रोग जाता रहता है.

१३ कंठमाला.

कान और जावडे के बीच में गांठें होती हैं वे कमजोरी से वा चारा और पानी स्वच्छ न मिलने से सूज जाती हैं और समय पाकर पक जाती हैं.

और इस रोग में चारा खाने में बडा कष्ट हो-

ताहै और इसी कारण दुर्बल होकर कोई २ तो मर भी जाते हैं. यह रोग चैंपी है इसके चैंप के और पशु तथा मनुष्य के लग जाने से शरीर की सब गाँठें पक जाती हैं और फिर एक बड़ा रोग उत्पन्न होसक्ता है. इस चैंप का असर एक मास में होताहै.

इलाज—जब जानो कि गांठ पकने पर हैं तो डाक्टर को बुलाकर चिरवा दो और उसमें का मांस निकलवा गेरो और फिर रुई के फोये को थूहर के दूधमें भिगोकर उसमें भरते रहो इससे आराम हो जायगा और मोरथूथा ४ मासे सोंठ १ तोला गेहूं के चून में मिलाकर गुड के संग लड्डू बनाकर एक टंक रोज खिलाना.

अथवा जिस ओर की गांठ पकी हो उस ओर के कान को ऊंचा करने से उस के नीचे जो

नस दीखे उसमें से रुधिर निकाल देना और फिर उस पर हलका दाग देना चाहिये.

जब ज्ञात हो कि यह रोग होगा तो तत्क्षण कान को मध्य से छेद देना और उसकी फुलक को काट डालना चाहिये. अथवा गांठ के चारों ओर गोल और मस्तक पर दाग दे.

गांठ के फूटने से पहिले उस को बैठा देने के लिये वाजरे का चून ५ तोला समुद्र (चढ़ाओ ५ तोला लेकर पानी में पीस गांठ पर दिको नोन तीन वार चुपड़े. में दो

१४ मूत्ररोग–रुधिरगिरना.

यह रोग मंदाग्निसे उत्पन्न होता है.

कारण इस रोग का ऐसी घास का चरना है जो पानी भरी हुई भूमिमें उग उठती है और यह रोग प्रायः गरीब मनुष्यों के पशुओंको हुआ

करता है. सिवाय चारेके गदला पानी भी इस रोगका घर है.

लक्षण—पहिले तो पशु दुःखी सा दीखता है और चारा भी अच्छी रीतिसे नहीं चरता जुगाल करना भी कम होजाता है दूध कम देने लगता है रोमांच रहते हैं. चमडा रूखा, कमर झुकना, दस्त होना, बद्धकोष्ठका रहना, कूँखमें गड्हे पड़ना, प्रथम रुधिर की फुटक मूत्र में आना, बद्धकोष्ठ के संगही रुधिर का आना, मूत्र त्याग शीघ्र और कष्टसे होना, मूत्र का रंग श्याम और दुर्गंधि युक्त हो जाना, क्षीणबल होना, आँख बैठ जाना, श्वास होना, यह लक्षण होते हैं और रोग के बढ़ने से अन्त को मृत्यु हो जाती है.

इलाज—रोग के आदि में जुलाब नं० २ देना उचित होता है. और फिर इन औषधोंमें से एक का सेवन कराना.

१—सोंठ १। तोला चिरायता १। तोला काली मिरच १।तोला अजवाइन १। तोला नोन ५तोला, इनका चौथाई गुड़ सबको मिलाकर गरम २ मांडमें पिलाना अच्छा है.

२—ताड़ी १२तोला सोंठ१।तोला मिरच काली १।तोला गुड़७तोला गरम पानी १सेरमें खूब मिला- कर पिलावे. खानेको चावल और अलसीका मांड देना चाहिये और हरी २ नरम घास भी देतेहैं.

जब रोग कुछ बढ़ जाय दस्त जारी हों तो चाक- मिट्टी५तोला कत्था२॥तोला सोंठ१।तोला अफीम ०॥ मासे ताड़ी ५ तोला पानी डेढ़पाव खूब मिलाकर पिलावे खुराक में मांडमें गुड ८ तोला और ताड़ी ५ तोला मिलाकर पिलावें और १ छटांक अलसीका तेल आधी छटांकगंधापिरोजा मिली हुई मांड भी देते हैं. जब रोग कम होजाय अर्थात् गिर जाय तो बलके लिये यह औषध दे.

सोंठ १ ॥ तोला चिरायता १। तोला मिरच-काली १। तोला अजवाइन १। तोला नोन ५ तोला इनसब का चौथाई गुड़ मिलाकर मांड के संग देना अच्छा होता है.

१५ मूत्रकृच्छ्र.

पेट फूले, थोडा२ बार २मूत्र करे, बद्धकोष्ट हो, और कभी २दो २ तीन २ दिनतक गोबर ही न करे, भूख जाती रहै और बेकली होती है.

उपाय—अमचूर२० तोला मिट्टीके बर्तन में पानी में भिगोकर मले और छानले फिर घी ऽ॥ सेर मिलाकर पिलादेने से आराम हो जाता है.

सांभर ५ तोला हलदी ५ तोला कालीमिरच ५तोला महीन पीसकर २०तोला सरसों के तेल में मिलाकर पिलावे.

१६ आँख दुखना.

आँखमें धूल वा हवा का झोका तथा चोट

लगने से यह रोग होता है आंखें लाल होती हैं फूल जाती हैं पानी टपकता है और दृष्टि कम जोर होजाती है जो इलाज नहो तो फूली पड़ जाती है.

इलाज—फिटकरी के पानीसे आंख को धोकर साफ़ रखनी. गरम पानी और फलालैन से सेंकना. लाल चंदन, गेरू, सोंठ, खड़ियामिट्टी और वच बराबर पानी में पीस दिन में तीन चार दफ़े आँख के चारों ओर लेप करें. हलील व लीला, आँवला, रसोत, आँबाहलदी, लोध, फिटकरी, बराबर पानीमें मिलाकर गरम करे और फिर आँखके चारोंओर लेप करे. अथवा हलदी, आँबाहलदी, अफीम, लाल चन्दन, समान सहजने के रसमें घिसकर आँखों के चारोंओर लेप करे.

आँख की रक्षा के लिये हलदी में रँगा हुआ कपड़ा आँख पर लटकाना चाहिये.

१७ आँख में फूली पड़ना.

आँख के दरद होने से वा किसी प्रकार की चोट से फूली पड जातीहै. प्रथम आँख में से पानी बहता है और लाल हो जातीहै फिर सफेद जाला फिर जाताहै और फिर वह मोटा होते २ फूल जाता है और सूझना बंद होजाता है.

इलाज—पानी में नोन घोलकर आँख के ऊपर कुल्ले करना—मनुष्य मूत्र ताजा २ आँख पर छिड़के, सेंधानोन शहद में घिसकर आँजना. हाथीका नख और फूली हुई फिटकरी पानी में घिस कर आँजे—गेरू ३ भाग, शोरा कलमी १ भाग काजल सा पीस कर आंजे—सांठीचावल को मदार के दूधमें भिंगो के सुखाले और फिर गजपुट में रखकर कोइलासा करे फिर उसके बराबर सिरसके

वीज, रीठा की मींगी, सेंधानोन मिलाकर सुरमा वनावे और आँजे. नींबू का रस थोडासा और नोन ८ रत्ती दोनों को लोहे के बासन में रखकर लोहे के दस्तेसे घोटे उसको दिनमें दो तीन वार लगाना.

घी ५ तोला को गरम करना और उसमें २॥ तोला फिटकरी पीस कर गेरने से झाग उठेंगे पीछे उस में अफीम १ रत्ती डालकर मिलाना, झाग बंद होनेपर उतार लेना और फिर यातो आँजना वा ऊपर के पलक पर लेपकरना.

कोई २ तो इस रोगमें आंखकी चारोंओर दाग देतेहैं और इस दाग देनेमें यातो गरम लोहा या केलेकी छाल जलाकर और उसमें चूना मिलाकर काममें लाते हैं.

१८ खाज.

इस रोगमें खुजली वहुत आती है और जहां

यह रोग होताहै वहांसे बाल उड़जाते हैं. यह रोग मैले कुचैले रहनेसे गंदा पानी पीनेसे रुधिर बिगड़ जाता है और फिर उससे एक प्रकारके कीडे होकर चमड़ीमें रोग उत्पन्न करदेते हैं यह रोग उडना रोग है इससे पोहोंको बचाना चाहिये.

इलाज—कारबोलिक साबुनसे शरीरको प्रति दिन धोना चाहिये गंधकके फूल १० तोला नारियलका तेल २० तोला ताड़पीन तेल ५ तोला खूब हिला मिलाकर खाजके स्थानपर चुपड़ना. गंधक १० तोला अच्छाचूना ५ तोला खूब पीसकर मिट्टीके पात्रमें भरना और फिर १ सेर पानी भरके गरम करना और खूब हिलमिल जाने पर छानलेना—और फिर किसी परसे खाज पर लगाना—

राल का तेल गंधापिरोजे का तेल सरसों का तेल सब बराबर गंधक जरूरत लायक मिलाकर शरीर पर मलना चाहिये.

हरताल और सांभर नोन घी में खूब मिलाकर दो तीनदिन धूपमें लगाना—सिरका और शराब वरावर मिलाकर मालिश करना—

जो खाज तर हो तो पारा १ भाग फिटकरी २ भाग खाकस्तर चोव अंगूर तीन भाग सिरकेमें पीसकर गायके घीमें मिलाकर लगाना—हुक्केके पानीसे सब शरीर धोना, जैतूनका तेल और सत्यानासीका तेल वरावर मिलाकर खाजके स्थान पर मलना.

१९ फोडे होना.

यह रोग रुधिर शुद्ध न होनेसे होता है इस रोगमें पहिले एक छोटीसी गांठ उठती है और फिर वह वढ़ती जाती है अन्तको पक कर फूटती है और पीव रुधिर वहने लगता है.

इलाज—जो फोड़ा पका नहो तो गेहूं के चूनकी

पुलटिस कोइलेका चूरा बुरककर बांधकर पकाना अथवा हाथीसूंडाकी छाल पीसकर तीन चार ुके दिनमें चुपड़नेसे पक जायगा. पक जानेपर श्तर से चीरे वा ये दवा लगावे मैनफल मुलहटी भालूके पत्ते पानीमें पीसकर गरम गरम लगावे– कबूतरकी बीट और मुर्गे की बीट दोनोंको पेसीहुई राईमें मिलावे और पानीमें पीस गरम रम फोड़े पर लगावे तो फूट जायगा–गूगलको ाहदमें गरम गरम लगावें तो भी फूट जायगा,

परन्तु जो फोडा कच्चा हो और वह वैठने क लायक हो तो कचनार की छाल, बालछड़ की छाल पानीमें पीसकर गरम गरम लगाना चाहिये–जामुन की छाल नीमके पत्ते मको के पत्ते गेरू सबको बराबर लेकर पानीमें पीस गरम रम लगावे

जब फूट जाय तो नीमके पत्ते ८तोला नोन
१तोला पीसकर घाव पर लुगदी भरदेनी उस पर
गेहूं की पुलटिस बांधनी चाहिये

जो फोड़ा बिगड़ जाय तो नीमका मरहम
लगावे वा सफेद फूल के करण वृक्ष के पत्ते पानी
में पीस कर घाव पर लगावे.

२० चोटके लगनेसे घाव पडना.

जो घाव किसी हथियार के काटे से हुआ
तो पहिले उसे सी देना उचित है और पट्टीआं
बांधकर रुधिर का बहना रोकदेना. जो रुधिर न
रुके तो उस पर बबूलका गोंद लगाने से बंद
होगा अथवा ठंढे पानी की पट्टी बांध कर उसे
पानी से तर रखना चाहिये. सुहागा भुनाहुआ
पीसकर घाव पर बुरकना राल सफेद पिसी
हुई और कपडे की राख दोनों मिलाकर बुरके-

जब रुधिर बहना बंद होजाय तो घाव के भरने को ये औषध लगावे –

फिटकरी२॥ तोला मोम ७॥ तोला ताडपीन का तेल १। तोला अलसीका तेल ७॥ तोला इन सबका मरहम बनाकर घाव पर फावा चढाना. चूने की कली और घुड घुमासा बराबर लेकर घावपर अलसीके तेल में मिलाकर लगावे; लाख और नोसादर पीसकर तिल्ली के तेलमें मिलाकर घावपर लगावे–नीमकी कोंपल ३तोला तूतिया, मुरदासिंग, राल सफेद, एक २ तोले लेकर पीस कर गाय के घी आध पाव में गरमकर डाले जब मरहम बन जाय तब कपडे पर लगाकर घावपर लगावे.

२१ घावमें कीड़े पड़जाना.

जब घाव चोट का हो वा फोडे का हो और मक्खियों के बैठने से कीड़े पड़ जावें और उसमें

से रुधिर और पानी मिला हुआ रिसे तो उसपर ये औषध लगानी चाहिये. हुक्के के पानी से धोवे

ताडपीन का तेल १० तोला कपूर ८ मासे दोनों को खूब मिलाकर गरम करे और फिर जैसे बने घाव पर लगावे—जयंती पुष्पवृक्ष की पत्ती का रस घावपर लगावे तो सब कीडे झड़पड़ें. वा गुड़वच पीसकर घाव में भरे, सीताफल की ताजा पत्ती पीसकर भरे—जो घाव भरे नहीं तो गधे की लीद को सुखाकर पीस के भरे.

मोरपक्ष की टिकुली ७ लेकर गुड़ में मिलाकर खिलाने से भी कीडे मरते हैं.

२२ नासूरका इलाज.

तूतिया १ तोला राल १ तोला सिंदूर १ तोला मुरदारसंग १ तोला गौकाघी एक पाव और मोम टकाभर मरहम बनाय के बत्ती रखने से नासूर बंद होताहै.

२३ मोच.

एकायक पैर के मुड़ जाने से नस में बल पडजाता है उससे फिर पैर ठीक नहीं पडता और सूजनभी आजाती है और चला नहीं जाता वा लंग हो जाती है.

इलाज–ठंढे पानी का कपड़ा बांधना–सब सूजन पटक जाय तो ये औषध लगाना.

नारियल का तेल१०तोला ताड़पीन का तेल १। तोला एमोनियाका पानी १। तोला इन सबको मिलाकर मालिश करने से मोच अच्छी आजाती है.

२४ जूं पड़जाना.

ये एक प्रकारके कीडे हैं जो रुधिर की तथा चमडी की खराबी से और पशु के मैले रहने से सब शरीर में पड़जाते हैं.

इलाज–तमाकू के पत्तों को पानी में पीस

कर शरीर पर चुपड़ना कई बार चुपड़ने के पीछे कत्थे से और फिर साबुनसे धो देना चाहिये—खाक-स्तर पानी में घोलकर लगावे—हलदी कडवे तेल में पीसकर मले—सीताफल वा खिरनी के बीज पानीमें पीसकर लगावे सरसोंका तेलऽ॥ सेर गंधक ।॥ छटांक रालकातेल१।तोला गंधापिरोजा ८ मासे मिलाकर कीडोंके स्थानपर लगावे.

परिशिष्ट औषध.

कमजोरीमें दवा देनेके लिये सोंठ १ तोला मिरच काली १।तोला चिरायता १।तोला नोन १ तोला अजवाइन१।तोला गुड़ सबका चौथाई इन सबको एकमेक करके गुनगुने चावल के मांड के संग देते हैं.

जुलाब.

(१) जमालगोटा १॥ मासा, नोन सांभर १८

तोला बद्धकोष्ठ में गुनगुने मांड के संग देते हैं.

(२) गंधक१० तोला सोंठ१।तोला अलसीका तेल पावभर आधसेर मांड के संग दिया जाता है.

(३) नोन ६ छटांक सवर कड़ुआ १। तोल गंधक५तोला सोंठ २॥तोला गुड़१०तोला पानी गरमऽ१ सेर में इन सबको औटाकर मिलाकर पिलाते हैं.

(४) सांभर नोन १० तोला गंधक१॥तोला सोंठ १। तोला गुड़ १॥ छटांक पानी गरम २ सेर ठंढा होने पर पिलावे.

ब्लिस्टर.

(१) तलीनी१भाग अलसीकातेल ६ भाग मोम भाग मोम पिघलाकर तेल मिलाओ और फिर तिलनी मिलालो.

(२) जमालगोटेकातेल६मासे सरसोंका तेल आध पाव खूब मिलाकर लगावे.

मांडबनाना.

चावल१ पाव पानीऽ १। सेर में १॥ घंटेतक पकावे फिर छान कर ठंढा करे और थोडासा नोन मिलाकर पकावे.

पेट में कीड़े हों तो.

कडुवातेल ऽ॥ सेर गंधाफिरोजा (ताड़पीन) २॥ तोला मिलाकर पिचकारी लगावे.

कंधे सूजना वा घाव की औषधि.

जब कंधा पकने लगे तो भैंसे के गोबर को पानी में पकायकर लगावे.

ऊंटकी मींगनी और खारी नोन मिलाय के पकावे और फिर सूजन पर लेपकरे.

आंबाहल्दी गेहूं की मेदा और चनेकाचून बराबर लेकर दूध में पकावे और लेपकरे

कंधेके फूटनेपर मरहम।

संगजराहत, मोम सफेदा टका २ भर, बनात की खाक, पुराने जूते की राख, अरना कंडा की राख तीनों छटांक २ अलसी का तेल डेढ पाव में सब को मिलाकर पकाले और फिर लगावे.

हलदी टकाभर खूब महीन पीसकर, अफीम छदामभर, कडुवा तेल १ छटाँक मिलाकर गरम गरम लगावे और मले.

रोगी पशुको चारा।

जब पशुको कुछ भी रोग होने का सम्भव हो तो उसको हलका चारा देना चाहिये जो शीघ्र पचजाय और पशु सुगमतासे खालेवे. जब कभी नरहाई में छोड़ दिये जाते हैं तो वहां पर जैसा मनमें आताहै वैसा चारा चरते हैं और इसी हेतु कोई२ समय रोग खड़े होजाते हैं जिनसे अंतको पोहे के प्राण जाते हैं सूखा के दिनों में तो जब

हराभरा नरम चारा नहीं मिलता तब पोहा जंगलमें जाकर वृक्षों की छाल,पत्ते,सूखी कठोर घास तथा और २ विषैले और कांटेवाली वनस्पातियां खाते हैं. इन के खाने से अजीर्ण बद्धकोष्ठ आदि विषैले रोग फैल जातेहैं और जब कभी वर्षा अधिक होती है और जंगलमें जलही जल होताहै तो ऐसे समय में अनेक प्रकार की जड़ी बूटी पानी के किनारे तथा भीतर उत्पन्न होजाती हैं और फिर जब पशु उन को चरता है तो मरोड़ा वायुगोला, अतिसारआदि रोग होजाते हैं. इन सर्व कारणों को देखने से यह बात सिद्ध होतीहै कि पशु को जहांतक बने हरा भरा नरम चारा चरावे और जिन दिनों दूब मिल सकती हो उसे चरावे और उसके न मिलने के दिनों में इस पुस्तक के अंत में जो रीति चारे को हराभरा

खने की लिखी है उस के अनुसार चारा बनाकर
ख छोडे और सूखा में वा गरमी के दिनों में
राावे ऐसा करने से पशु रोगी न होगा. जो पशु
ोगी हो तो भी इस चारे में से थोड़ा २ चराने से
ल बना रहताहै और इस चारे के सिवाय चावल
का मांड बनाकर खिलाना बहुत बडा पथ्यहै.

पानी.

रोग न होने देने और रोग की अवस्थामें भी
पानी कीभी पूरी सँभाल रखना चाहिये जहाँ
ाक हो सके कूयें से सद्य पानी लेकर पशुको
पेलाना सदा सर्वदा अच्छा है और पशु निरोग
हता है. जो पशु नरहाई में चरने छोडे जाते हैं
उनकी सँभाल ग्वाला लोगों को रखनी उचित है.
जहां कहीं शुद्ध निर्मल पानी मिले पोहोंको
पिलावें और उनको पेट भर पानी पीने दें

क्योंकि पेटभर पीने से पशु मजबूत और पुष्ट होता है. गदला पानी पिलाने से अनेक रोग खड़े होजाते हैं. चौमासे में नदीका पानी तथा तालाबों का पानी मिट्टीके मिलजाने से गदला होजाता है इस हेतु उसको पशुओं को न पीनेदे और जब शरद वा जाड़े और गरमी के दिनों में पानी नितर जाता है तो उन दिवसों में भी नदी तथा तलाव के किनारे का पानी न पिलावे वरन् कुछ दूर जलमें लेजाकर पोहोंको पिलावे परन्तु किसी छोटे उथले गड्ढ का पानी कभी न पीने दें. जो गदला पानी पीने में आता है तो अजीर्ण पथरी वायुगोला आदि कठोर रोग होते हैं. जो रोगी ऐसा जल पीताहै तो रोग की और बढ़वार होती है. इन सर्व विचारों से यह सुगम और श्रेष्ठ रीति है कि पोहों को घर पर ही तीन

दफे रोज सद्पानी पिलावे और सफाई से रक्खें.

रोगीका स्थान.

जितनी चारे और पानी की संभाल रखना उचित है उतना ही रोगी पशु के सुख के लिये उसके रहने का स्थान भी ठीक रखना अत्यावश्यक है. रोगी पशु के रहनेका स्थान छायावाला होना चाहिये क्योंकि जो पशु खुले में रहेगा तो धूप और ओस में रहने से बहुत से अनर्थ खड़े होजाने का भय रहता है. और जो गरमी शरदी तथा वर्षा से बचाकर रक्खा जायगा तो रोगी पशु को आराम होने में शीघ्रता होगी.

पशुके रहने का छायादार स्थान बिल्कुल बंद भी न होना चाहिये जहां तक बन पड़े ऐसा रखना चाहिये कि उसमें शुद्ध वायु भीतर आसके और अशुद्ध बाहर निकलतीरहे. इस हेतु मकान

में भीति के मध्य में तो जंगलेदार खिड़की रहे
और ऊपर छत के पास रोशनदान रहे जिन में
होकर कारबोनिक एसिड गेस बाहर निकलतीहै.
और स्थान में अंधकार न रहकर प्रकाश
बनारहै.

सफाई।

जिस स्थान पर रोगी पशु रहे वह स्थान सूखा और कूड़े करकट से शुद्ध रहना चाहिये. गोबर तथा मूत्र नहीं एकत्र रहने पावे इस हेतु इन को उस स्थान से हटाते रहना चाहिये किसी प्रकार की कीचड़ भी वहां नरहे जो रहेगी तो पशु के बैठने से उसका शरीर गंदा रहेगा और स्थान भी भिनाभिना बनारहेगा जो ऐसा अनुमा-नहो कि पशु बंधने के स्थान की वायु बिगड़ गई है वा उड़ना रोग पशुके हुआ है तो उस

स्थानकी वायु शुद्ध करने के लिये गंधक वा डामर की धूनी दीजाय वा कारबोलिक एसिड, फेनिल, कारबन बाइसलफाइट आदि को छिड़कावे.

अध्याय ५.

पशुओंकी नसल सुधारना.

इस देश में प्रायः यह देखा जाताहै कि दिन२ पशु बलहीन होते जाते हैं. और फिर खेतीके कामके योग्य नहीं रहते. इसका एक प्रधान कारण यही है कि हमारे देशवासियों को गाय भैंसके बछड़ों के बलवान् उत्पन्न होने की ओर ध्याननहीं है. जबतक खेतीके पशुओंको बलवान् न किये जाँयगे तबतक खेती की भी सुधार होना दुस्तरहै क्योंकि खेत जोतना कूओंसे पानीके पुर खींचना खलियान में बालियोंको खूंद कर

अन्नके दाने जुदे करना तथा नाजको गाड़ीमें भरकर मंड़ी में पहुँचाना और खेतमें खात पहुँचाना आदि काम बैल और भैंसों का है. जितने ये बलवान् होंगे उतनाहीं सबकाम ठीक और सुगमतासे होगा और बलहीनता में समय और धन का खराबही है, बैल और भैंसों में बैलही खेती के काम में विशेष आतेहैं क्योंकि भैंसे स्वभावसे ही धीरे और आलसी होते हैं इस कारण जब हल चलाने वा कूओं की पैर पर लगाये जाते हैं तो एक काम जो घंटे में होताहै वह दो घंटे वा अधिक में पूरा पड़ता है और गरमी की ऋतुमें तो वे किसी कामके नहीं रहते थोड़े से परिश्रम में हाँफ उठते हैं और चौमासे में उन को पानीमें पड़ा रहना रुचताहै इस हेतु खेतों में काम नहीं देसक्ते इन सब बातों को

ध्यान में रखकर किसानलोग बैलों ही को खेती के काम में लाते हैं. ऐसे उपयोगी बैलों की उन्नति के लिये यत्न करना उचितहै.

बैलों की उन्नति दो प्रकारसे हो सक्ती है प्रथम तो उनको चारा दाना आदि देकर बलवान् करना. परन्तु बड़े खेदकी बात है कि जमींदार और किसान इन आप हाथ पैर रूपी बैलों की ओर कुछ भी ध्यान नहीं देते केवल सूखे भुस वा घास परही इनको पालते हैं जो इस पुस्तक में दूसरे अध्याय के लेखानुसार उन को पालन करें और चारा तथा दाना देते रहें तो वे बलवान् रहसक्ते हैं और रोगी होने की अवस्थामें उनसे काम न लेकर स्वास्थ्य पर ध्यान रख रोग का उपचार करे और फिर बलकारक ओषधि और चारे से पोषण करे तो काम के

समय वे अधिक काम के होसक्ते हैं. परन्तु किसान लोग ऐसा तो नहीं करते वरन् रोगी होने की अवस्थामें उनसे काम लेते रहते हैं जब पोहा बिल्कुल ही रोग में गिरजाताहै तो लाचार होकर उसे छोड़ते हैं और फिर ओषधि आदि की संभाल न होनेसे प्रथम तो मरजाताहै वा जो बच गया तो बलहीन तो अवश्य होजाता है और फिर उतना काम नहीं देसक्ता.

दूसरा उपाय बैलों की उन्नति का गौ की उन्नति और फिर बलिष्ट हृष्ट पुष्ट सांड़ द्वारा बच्चे लेना है. और यही उपाय मुख्य है. जो गौ ही हृष्टपुष्ट और बलवान् न होगी तो प्रथम उस की सन्तति बलिष्ट नहोगी और दूसरे बछडों को बलकारक दूध भी बचपने में न मिलेगा अर्थात् गौ के हृष्टपुष्ट होने पर बछडों का निरोग और

बल युक्त होना निर्भरहै. इस देश के जिन २ भागों में गऊ लम्बी चौड़ी और बलवाली होती हैं वहां के बैलभी प्रख्यात हैं और इस बात के लिये मैसूर, सिंध, गुजरात, नागोर और हरियाना प्रख्यात हैं. इन विभागों के बैलही प्रख्यात नहीं वरन् गौभी अधिक दूधवाली होती हैं.

गौ से बलवान् सन्तति लेने के लिये प्रथम तो गौ जब निरोग और पूर्ण अवयव की हो उस समय सांड़ दिखाना उचितहै इस से उलटी परम्परा इस देशमें प्रचलित है. गाय जबतक पूर्ण अंगकी होने नहीं पाती कि सांड़ दिखा देते हैं और कोई २ समय तो ऐसा भी होताहै कि एक बछड़ा बड़ा होने भी नहीं पाया कि फिर सांड़ छोड कर गाभन करा देते हैं. इन कारणोंसे जो गौकी सन्तान होती है वह निर्बल और

रोगी उत्पन्न होती है. जब जन्म से ही प्रकृति और शरीर अच्छे और निरोग न बनेंगे तो फिर उनको तथा उन की सन्तान को कैसे अच्छा समझाजावे जो यह इच्छा हो कि हम को अच्छे सुघड़ और बलयुक्त बैल प्राप्तहों तो पहिले ऐसे उपाय करने चाहिये कि गाय के एक मुख्य अवस्था के पहुँचने पर ही सांड़ दिखाया जाय और जब कोई गाय बछड़ा दे चुके तो जबतक उसका बच्चा पूर्ण अंग और बलवाला न हो जाय तब तक गाय को सांड न दिखाया जाय और उसको शुद्ध बलकारक वा पौष्टिक पदार्थ का चारा देना चाहिये. इन नियमों के ध्यान में रखने से गौ भी अच्छी व्यवस्था में रहैगी और उस की सन्तति भी अच्छी होगी.

इन ऊपर सूचित उपायों में पशुओंकी

उन्नति के करने के लिये सर्व साधनों में बीज का नियम सब से अधिक फलदायक है जैसा बीज होगा वैसाही उस का फल भी होगा. क्षेत्र भी बीज के योग्य होगा तो और भी फल अच्छा होगा. खेत की मिट्टी किसी प्रकार से कमजोर हो तो बीजके अच्छा उपजनेका सम्भव है परन्तु जो खात देकर तथा गहरा हल चलाकर खेत कमाया हुआ होगा तो उस में बीज के बोनेसे फसल और भी अच्छी होगी जो बीज रोगी वा मुरझाया हुआ होगा तो फल होनेके स्थान उसका बहुत सा भाग वृथा जाता है.

चाहे गौ हृष्टपुष्ट हो पर सांड़ हीनबल और छोटासा ही छोड़ा जावे तो बछड़ा भी छोटा और बलहीन होता है जो गाय भी बलहीन मरी सी होगी तो गर्भस्राव हो जायगा वा बच्चा होकर

मर जायगा. परन्तु जो गाय चाहे जैसी हो और साँड़ हृष्टपुष्ट बलिष्ट हो तो उस के बच्चे भी लम्बे चौडे और बलवान् अंगों के होंगे. यदि गाय और सांड दोनों ही एक से ढांचे के हों और बल-युक्त और पुष्ट हों तो फिर उनकी सन्तति भी उनसे किसी प्रकार न्यून नहीं होती. जो फिर बछडों की चराई और संभाल जैसी होनी चाहिये वैसी हो तो फिर उस के फल का क्या कहना है.

जिन को गौ पालन और बैलों की अच्छी नसल के रखने का चाव हो उन को उचित है कि अच्छे खेतकी गाय को पाले और इसी रीति से अच्छे नसल के और शरीर के सुडौल और बलवान् सांड भी रक्खे और फिर उनसे जो बैलों की सन्तति चलेगी वह अधिक श्रेष्ठ होगी.

जो दोनों गाय और सांड अच्छी जाति के और निरोगी होंगे तो वे बढते शीघ्र हैं और फिर जितना और पशुओं को खिलाते हैं यदि वैसा और उतनाहीं इनको खिलावें तोभी इन से काम अधिक ले सक्ते हैं और दूध भी अधिक और पुष्टिकारक मिलताहै. जो उनको चारा भ उनके लायक अच्छा दियाजाता है तो फिर उनके गोबर में भूमि को उर्वरा करने के विशेष गुणवाला खात भी मिलजाताहै. इस हेतु जहां तक होसके गौ की सन्तान की उन्नाति के लिये अच्छे खेत के सांड भी धनाढ्य लोगों को पालने चाहिये जिस से बैलों की उन्नाति करने में गरीब लोगों को भी सहायताहो.

गाय और बैल की उन्नाति के हेतु हमारी सरकार ने हिसार में गौशाल बनारक्खीहै और वहां

अच्छे २ साँड़ तथा गौ पाली जातीहैं और उनसे बैलों की नसल सुधारी जाती है इतना लाभ सरकार को इस गौशाला से हुआ है कि जो बैल सरकार को मोल लेने पड़ते थे वे अब इस गौशाला से मिलते हैं और बहुत बढिया और कमव्यय से तैयार होते हैं ऐसाभी सुनाहै कि सरकार ने यह भी नियम कर रक्खा है कि यदि कोई बैलों की नसल सुधारने को सांड चाहे तो अर्जी देने पर वहां से सांड मिल सक्ताहै और इस लाभ को बहुत से स्थानों के मनुष्यों ने उठाया है और फल भी अच्छा हुआहै.

बड़े जमींदारों तथा तअल्लुकेदारों से प्रार्थना है कि वे अपने २ यहां सरकारी गौशाला से सांडों को मंगाकर पालें और बैलों की नसल की उन्नति में मदद करें. जब सांड आजाय तो फिर

अपनी प्रजा से कहैं कि जिन के गौ हों वे इन सांडों द्वारा ग्याभन करावें और जंगल में छूटे हुए छोटे २ तथा बलहीन बच्चे सांडों से गायों को बचावें. यो यह नियम किया जायगा तो थोड़े ही समय में उन जमींदारों तथा तअल्लुकेदारों के गाँवों में बैल तथा गौ बहुत अच्छे सुघड़ और पुष्ट मिलैंगे जिनसे खेती के सब कामों तथा साधनों में अधिक लाभ होरहैगा और दूध, घी मट्ठा भी पौष्टिक प्राप्त होतारहैगा.

परिशिष्ट ।

चारे का खास.

जैसे नाज के खास वा खत्ती भरकर रख छोड़ते हैं कि जब काम पड़े निकालकर काम में लाते हैं और वह नाज ज्योंका त्यों निकल आताहै इसी-प्रकार पशुओंका चारा कडब, घास आदि भी

खासों तथा खत्तीयों में भरकर रखते हैं जिससे चारा हरा भरा दो वर्षतक पोहों को मिल सक्ताहै.

चारेके खास वनाने के लिये ऊंची भूमि अच्छी होती है क्योंकि उँचाई पर भूमि में पानी की तरी नहीं पहुँच सक्ती और चारे के सड़नेका भय नहीं रहता. इस कामके लिये चिकनी कठोर मिट्टी की भूमि अच्छी होतीहै और रेतली अथवा ककरीली धरती में तो पानीके भरने का भय होताहै और कभी २ खास की दीवार खिसक पड़ती है.

चारे के लिये जब स्थान ऊपरके लिखे मुवाफिक मिल जाय तो उसमें एक गड्ढा २० फुट लम्बा १० फुट चौड़ा और ६ फुट गहरा खोदो और फिर यातो उसकी किनारी ईंट तथा चूने से

बांधो या उस गड्ढे को अग्निसे जलादो कि फिर उसमें पानी वा तरी के भरने का भय न रहे. इतने बड़े खासमें जो चारा भर कर रक्खा जायगा वह २ पोहों के लिये वर्ष भर काम देगा.

खासके तैयार होने पर उसमें जो चारा भरा जाय वह सब प्रकारका होसक्ताहै कड़व, घास खेतके निराने से मिली घास आदि सब प्रकारका चारा भराजाताहै जो चारा कि पोहे उगा हुआ नहीं खाते वह भी जो खासमें दावकर रक्खा जाय तो पोहे खालेतेहैं.

खास को चारे से भरने में इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि वह धीरे २ भराजाय परन्तु इतना धीरे न भराजाय कि चारे पर हवा असर करके उसे सुखादे. जितना बड़ा खात बनाना ऊपर लिखाहै उसके भरने में जो एक सप्ताह

लगे तो कुछ हरज नहीं है परन्तु हवा और धूप से बचने के लिये उसके ऊपर छप्पर अवश्य छवादे. कड़ब को कुटी करके और घास काटने के बादही खास में भरना चाहिये. पहिले तो एक वा डेढ फुट की घास की तह जमानी और फिर उस को पैरों से खूब खूंदना चाहिये और फिर एक दो दिन में एक तह और चारे की चढानी और फिर पैरों से खूँदनी खूब खूंदने से घास भीतर ही भीतर गरमाजावेगी. गर्मी आई वा नहीं इस बात के जानने के लिये एक लोहे की सलांग. २॥ इंच के व्यास की उस घास में दो वा २॥ फुट गहरी गाड़ देना चाहिये और घास को खूंदता रहै आध घंटे बाद इसको निकाल कर देखे जो यह सलांग इतनी गर्म होगई हो कि उस पर हाथ न रखसकें तो जानो कि घास

में गर्मी आगई जो गर्मी उत्पन्न न होगी तो घास सड़ उठैगी जब कुटी आदि भरो तो प्रत्येक तह के ऊपर नोन भी बुरकते जाओ सब खास के भरने में डेढ़ मन नोन लगजायगा. जब सब खास भरजाय तो ऊपर से खूब खूंदना और फिर भारी २ पत्थर वा लकड़ी से दाबना जब चारे का नीचे बैठना बंद होजाय तो फिर उस के ऊपर से बोझ उठाकर सिरकी या चटाई बिछा-देना और ऊपर से मिट्टी के मोंदे बना बनाकर पटक कर दाब देना कि उस खास के भीतर हवा न पहुँच सके जब एक वा दो दिन में गोंदे बैठ जाँय और कहीं हवा भरी जगह नरहै तो फिर उसपर दो वा अढाई फुट मिट्टी और चढा देना और फिर ऊपर से लेहस कर बंद कर देने से खास तैयार हो जाताहै.

इस तरह पर खात को बंद करने के कमसे कम दो मास पीछे चारा निकालने योग्य होजाताहै. इसके निकालने में एक ऐसा स्थान बनालेना चाहिये कि जिसमें होकर चारा निकाल लिया जाय पर हवा खास में न पहुँचे सहल उपाय इस का यह है कि खास के उत्तर की ओर एक तरफ से कोई ६ फुट मिट्टी ऊपर की खोद-लेनी और फिर दो फुट लम्बी और ३ फुट ऊंची सिढ़ियां बहुत सफाई से बनानी कि उन की किनार किसीतरह गड़बड़ नहोजाय वरन् बरा-बर चौरस करे जिससे हवा भीतर न घुस सकेगी चारे के निकालने में इस बात का पूराध्यान रहै कि हवा भीतर न घुसने पावे नहीं तो चारे में गलाव सड़ाव लगजायगा और चारे को बड़ी सफाई से काटकर निकाले जैसे किसी मकान को नीव के लिये खोदते हैं.

इस इकट्ठे किये हुए चारे मेंसे पोहे को चराने के लिये जो २० वा ३० सेर खिलाया जाय तो ठीकहोगा और इसलिये जो खास मेंसे १ घन- फुट चारा लिया जाय वह २८ सेर के अनुमान होताहै ऐसा इसरीति के जाननेवालों का मतहै परन्तु पहिले इस को अनुभव में लाना मुख्य है. जो ऊपर का हिसाब ही ठीक मानें तो ऊपर नाप के खास का चारा तीन पोहों के लिये एक वर्ष को काफी वाफी होगा. एक बड़ी दिक्कत इस में यह होतीहै कि पहिले ही पहिल पोहे इसे खाते नहीं वरन् जब उन के सामने रक्खो तो सूंघकर मुँह फेर लेते हैं परन्तु जो एक दफे खालिया तो फिर स्वाद लगजाताहै इस में एक दिन तो इसी में जाताहै.

इस खास के चारे से इतने लाभ होते हैं. जो

पशु इस को खाते हैं उन को जो आधाही दाना वा खल दीजाय तो भी दूध अच्छा देंगे और आधे दानेकी बचतहोगी. जो आधा तो खास का चारा और आधा सूखी घास वा कडब की कुटी मिला के दीजायगी तो भी लाभ ही रहैगा.

पोहे को निरहाई न भेजकर घर पर इसी चारे में रक्खा जाय तो कोई हानि नहोगी. गर्मी तथा मेह की खेंच के समय यह चारा लाभदायक होताहै.

इति कृषिविद्या भाग ३ समाप्त.

पुस्तक मिलनेका पता–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर छापाखाना" खेतवाडी–बंबई.

शब्द. अर्थ	शब्द अर्थ.
अजीर्ण—बदहजमी, अपचा	इच्छा—ख्वाहिश
अथवा—या, यानी	उचित—योग्य, ठीक
अत्युत्तम—बहुतअच्छा	उन्नति—तरक्की
अत्यावश्यक—अति जरूरी	उपचार—उपाय
अनर्थ—बुराई, बुरा	उपयोग—काममें लाना
अन्त—अखीर	उपरान्त—पीछे
अनावृष्टि—सूखा	उपस्थित—मौजूद
अनुसार—मुवाफिक	उष्णता—गरमी
अनुभव—तजरुबा	एकत्र—इकट्ठा
अभीष्ट—मनमाना	एमोनिया—नौसादर
अवधि—मियाद	एप्समसाल्ट—एकअंगरेजीखार
अवस्था—हालत	कष्ट—दुःख
अवयव—शरीर, अंग	कर्तव्याकर्तव्य—करने न करने योग्य
अवश्य—जरूर	कारण—सबब
असम्भव—गैरमुमकिन	कारबोलिक—एक दवा
असाध्य—दुश्वार	कृष—दुबला
अंधकार—अंधेरा	केवल—सिर्फ
आदि—वगैरह	कोष—खजाना
आमाशय—सफरा	क्रम—तरतीब
आरोग्यता—तन्दुरुस्ती	खेद—दुःख
आयुष्मान—उम्रवाला	

गर्भ–हमल
गर्भस्राव–हमलगिरना
ग्राम–गाव
ग्रामीण–गँवार
गोंदकतो–एक गोंद विशेष
घाव–तबीअत, शोक
चिकित्सा–इलाज
चित्तभ्रम–बहँकजाना
चिह्न–निशान
ज्वर–बुखार
ज्वरांश–बुखारकी गरमी
तथा–और, वा
दशा–हालत,
द्वारा–से, जरिया
दुस्तर–कठिन
दृष्टि–निगाह
दुर्गंधि–बदबू.
दुर्घटना–हादसा
दुःसाध्य–मुश्किल
धनाढ्य–दौलतमंद
निदान आखिरश

निर्भर–भरोसा
निमित्त–बहाना, कारण. वायस
निर्मल–साफ
नियत–मुकर्रर
नियमों–असूलों, कायदों
न्यून–कम, छोटा
परिणाम–अन्त, नतीजा
पदार्थ–वस्तु, चीज़
परिश्रम–मेहनत
परिशिष्ट–अखीर
पशु–पोहा
पाचनशक्ति–हाज़मेंकी ताकत
पुनः–बारबार, फिर
पुष्ट–मोटा ताजा
पैमाना–नाप
पोषण–पालना
पोषक–पालनेवाला
पौष्टिक–ताक़तदेनेवाला
प्रकार–किस्म, भांति

प्रकाश—उजेला
प्रख्यात—मशहूर
प्रकृति—स्वभाव
प्रजा—रिआया
प्रतिदिन—रोज़.
प्रदान—देना,
प्रधान—मुख्य, बड़ा
प्रबल—जोरदार
प्राप्त—पायाहुआ.
प्राणस्थिति—जीवन
प्राणीमात्र—जीवधारी
प्रार्थना—अर्ज़
प्रायः—विशेषकर, अक्सर
बद्धकोष्ठ—कब्ज़ीअत
बलउत्पादक—मुकब्बी बलदेने वाली
बलहीन—कमजोर
बलिष्ट—ताक़तदार
बहुमूल्य—क़ीमती
बाह्यपदार्थ—बाहरकीचीज़ें.
भूमि—धरती
भय—डर
मन्तव्य—माननेलायक
मस्तक—माथा
मिताहार—थोड़ा खाना
मावजत—देखभाल टहल
मास—महीना
मंदाग्नि—बदहज़मी
मृत्यु—मौत.
यदि—जो
यथार्थ—जैसाचाहिये
यत्न—उपाय
योग्य—लायक
रक्षा—हिफाज़त
रुधिर—खून, लहू
लक्षण—चिह्न, पहिचान
वनस्पति—नबातात
वर्ग—भेद
वर्षा—मेह
विपरीत—औंधा, खिलाफ

विभाग-हिस्सा
विषय-मजमून, बात
विषयैले-विषभरे, जहरवाले
व्यवस्था-हालत
व्यय-खर्च
शक्ति-ताकत
शारीरिक-शरीर सम्बन्ध
शीघ्र-जल्दी
शुद्ध-साफ़
श्रेष्ठ-अच्छा
सहस्त्रों-हजारों
सहायता-मदद
सूक्ष्म-बारीक
सन्तुष्ट-अघाना, राजी
सञ्चय-इकट्ठा, जमा.
संक्षेप-थोडासा, खुलासा
सञ्चार-चलना
सन्तति-औलाद
सर्वमान्य-सबकापूजनीय मकबूल.
सम्भव-मुमकिन
सद्य-फौरन्, झट
सप्ताह-हफ्ता
सुगमता-आसानी
स्पर्श-छूना
स्थाई-कायम
स्वच्छ-शुद्ध
स्वच्छन्दता-आजादी
स्वयम्-खुद.
स्वादिष्ट-मजेदार
स्वास्थ्यता-निरोगपना
श्वास-दम, सांस
स्वेद-पसीना
हर्षित-खुश.
हेतु-बायस, कारण
क्षेत्र-खेत,
क्षीणबल-कमजोर.
ज्ञात-जानाहुआ

इति ।